आरम्भ वर्ष - 2023
चातुर्मासिक - Tri-Annual

वर्ष - द्वितीय
अङ्क - चतुर्थ (दिसम्बर - 2024)
ISSN - 3048-6319 (Online)

बुन्देलखण्ड विमर्श
BUNDELKHAND VIMARSH

(भारतीय ज्ञान परम्परा की सान्दर्भिक एवं पुनरीक्षित शोधपत्रिका)
(Refereed and Reviewed Research Journal of Indian Knowledge System)

: प्रकाशक :

बरौदी संस्कृति संस्कृत संस्कार शिक्षा समिति
BARAUDI SANSKRITI SANSKRIT SANSKAR SHIKSHA SAMITI
ग्राम - बरौदी, पत्रालय - सनौरा, जिला - दतिया (मध्यप्रदेश), भारत, 475686.
Vill.- Barodi, P.O.-Sanora, Distt.-Datia(Madhya Pradesh) Bharat,475686.
Cont.- +91 88277 66640, +91 78799 58816,
Email:- sanskritsamiti17@gmail.com, Website:- www.sanskritsamiti.org

शोधपत्रिका विवरण :-

- शोधपत्रिका का नाम (हिन्दी में) - बुन्देलखण्ड विमर्श
- शोध पत्रिका का नाम (अंग्रेजी में) - BUNDELKHAND VIMARSH
- प्रकाशन का विषय क्षेत्र - बहु विषयक
- प्रकाशन की भाषा - बहुभाषिक
- आरम्भ वर्ष - 2023
- प्रकाशन अवधि - चातुर्मासिक (Tri-Annual)
- ISSN - 3048-6319
- प्रकाशन माध्यम - ऑनलाइन

अंक विवरण :-

- प्रकाशन वर्ष - द्वितीय
- अङ्क - चतुर्थ (दिसम्बर - 2024)

सदस्यता विवरण :-

- वार्षिक सदस्यता - 1500/- रुपये मात्र
- एक अंक - 750/- रुपये मात्र

प्रकाशक विवरण :-

बरौदी संस्कृति संस्कृत संस्कार शिक्षा समिति

सम्पर्क सूत्र :-

ग्राम - बरौदी, पत्रालय - सनौरा, जिला - दतिया (मध्यप्रदेश), भारत, 475686.
Vill.- Barodi, P.O.-Sanora, Distt.-Datia (Madhya Pradesh) Bharat, 475686.
Email :- sanskritsamiti17@gmail.com, Website :- www.sanskritsamiti.org
Cont.- +91 88277 66640, +91 78799 58816.

प्रधान सम्पादक

डॉ. उपेन्द्र भार्गव

सम्पादक

डॉ. आनन्द प्रकाश शुक्ल

सह सम्पादक

डॉ. कपिल कुमार भार्गव, आकृति शर्मा, नीता शर्मा

-: सम्पादक मण्डल :-

प्रो. श्यामदेव मिश्र (उत्तर प्रदेश)
प्रो. प्रसाद गोखले (महाराष्ट्र)
डॉ. दिनेश रसाळ (महाराष्ट्र)
कृष्णकान्त तिवारी (मध्य प्रदेश)
प्रो. नीलाभ तिवारी (मध्य प्रदेश)
प्रो. पराग जोशी (महाराष्ट्र)
डॉ. नितिन जैन (नयी दिल्ली) डॉ.
डॉ. रमण मिश्र (मध्य प्रदेश)

-: सहायक सम्पादक :-

डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी (मध्य प्रदेश)
डॉ. धनञ्जय मिश्र (जम्मू एवं कश्मीर)
डॉ. हिमांशु द्विवेदी (मध्य प्रदेश)
डॉ. नरेश शर्मा (हरियाणा)
डॉ. रामकुमारी (गुजरात)
डॉ. लवलेश मिश्र (मध्य प्रदेश)
डॉ. कृष्णकुमार भार्गव (आन्ध्र प्रदेश)
डॉ. मोहन बैरागी (मध्य प्रदेश)
डॉ. शमीनाज़ खान (हिमाचल प्रदेश)
डॉ. राकेश दास (पश्चिम बंगाल)
डॉ. लक्ष्मीविजयन् वी.टी. (केरल)
डॉ. मृत्युंजय कुमार मिश्र (राजस्थान)
डॉ. देशबन्धु (नयी दिल्ली)
डॉ. अवतारजीत सिंह (म.प्र.)
डॉ. पुष्पिन्दर जोशी (पंजाब)
डॉ. रूपाली सारये (मध्य प्रदेश)
डॉ. प्रभाकर पाण्डेय (मध्य प्रदेश)
डॉ. रमा आर्या (मध्य प्रदेश)
डॉ. अवधेश श्रोत्रिय (बिहार)
डॉ. दीपक पाठक (उत्तर प्रदेश)
श्रीमती शिरीन कुरैशी (मध्यप्रदेश)
डॉ. प्रियव्रत मिश्र (उत्तर प्रदेश)
डॉ. अखिलेश्वर मिश्र (तमिलनाडु)

प्रबन्धन एवं तकनीकि सम्पादक

विवेक कुमार शर्मा
राज भार्गव

सम्पादकीय

"स्वाध्यायप्रवचनाभ्यं न प्रमदितव्यम्" इस उपनिषद वाक्य के ध्येय को जीवन लक्ष्य बनाकर भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धान्तों द्वारा अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से अनेक शोध अध्येता, अनुसंधाता तथा गवेषकों ने प्राचीन काल से चारों वेद, छह वेदांग, अठारहों पुराण, रामायण, महाभारत, शताधिक उपनिषद, दर्शन और विस्तृत संस्कृत वाङ्मय के अथाह ज्ञानसिन्धु को पार करने का प्रयत्न किया है और वर्तमान में भी यह यात्रा अनवरत रूप से प्रवाहमान है। प्रत्येक शोधार्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह निरन्तर स्वाध्याय करे और स्वाध्याय से उपार्जित ज्ञान को अपने आलेख द्वारा अन्य ज्ञान पिपासुओं तक सम्प्रेषित करने का यत्न भी करे तभी अध्ययन एवं अनुसन्धान की सार्थकता सिद्ध होती है। ज्ञानप्रवाह को निष्कल्मष बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि शोध, अनुसन्धान एवं गवेषणा को प्रोत्साहित किया जाए तथा शोधार्थियों को पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराये जाने चाहिए जिससे संचित ज्ञान की अभिरक्षा तथा भविष्य के लिए उसका पोषण सुनिश्चित किया जा सके।

वर्तमान में भारतीय ज्ञान परम्परा के साथ अन्य आधुनिक ज्ञान - विज्ञान के समावेशी एवं अन्तर्विषयी तथा भारतीय भाषाओँ में शोध अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करने के लिए जो प्रावधान तथा प्रयत्न वर्तमान 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति' में किये गए हैं वे निश्चित रूप से शिक्षा में क्रान्ति का सूत्रपात करते हैं। भारतीय ज्ञान मीमांसा में योग, ज्योतिष आयुर्वेद, वेदान्त, राजनीति, धर्म, समाज, अर्थशास्त्र तथा मनोविज्ञान आदि ऐसे अनेक महत्वपूर्ण विषय हैं जिनका अध्ययन अन्य विषयों के परस्पर सामंजस्य से नूतन दृष्टि प्रदान करता है।

अतः प्रस्तुत शोध पत्रिका 'बुन्देलखण्ड विमर्श' भारतीय ज्ञान परम्परा में निहित लोक कल्याण परक विषयों के प्रचार - प्रसार, उन्नयन एवं शोध उद्देश्यों को पूर्ण करने हेतु सुधी पाठकों, विद्वज्जनों, समीक्षकों, आलोचकों के समक्ष प्रस्तुत है। हमारा लक्ष्य है कि पत्रिका में प्रकाशित होने वाले शोधपत्रों के माध्यम से हमारे अध्येता शोधार्थियों के ज्ञान में वृद्धि हो तथा वे सान्दर्भिक शोध की दिशा में प्रवृत्त हो सकें। हमें आशा है कि हमारे प्रिय पाठकों के महत्वपूर्ण सुझाव और मार्गदर्शन हमें निरन्तर प्राप्त होंगे जिनसे हम अपनी गुणवत्ता विकसित कर सकेंगे तथा आपके लिए सुदृढ़ बौद्धिक पाथेय उपलब्ध करा सकेंगे।

आपके स्नेह एवं सहयोग का आकाङ्क्षी

डॉ. आनन्द प्रकाश शुक्ल

(सम्पादक)

चैत्र शुक्ल एकादशी

३० दिसम्बर २०२४

विषयानुक्रमणिका

क्र.	शोधपत्र शीर्षक	लेखक का नाम	पृ. क्र.
01	21वीं शताब्दी में नीति शतक की शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	नितेश कुमार नागर	01 - 05
02	सृष्टि के प्रकाश पुंज : अंधेरे के आलोक पुत्र	गौरव गौतम	06 - 11
03	जनकाव्य की चेतना के कवि त्रिलोचन	डॉ. रुपाली सारये	12 - 16
04	महादेवी वर्मा के काव्य में विरह रूप	डॉ. प्रतिभा जोशी	17 - 23
05	Environmental Awareness in the poetry of Dr. Ramesh Pokhriyal ‘Nishank’	Shraddha Choudhary	24 - 30
06	भारतीय ज्ञान परम्परा तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान में स्वप्न विश्लेषण	डॉ. कपिल भार्गव	31 - 35
07	क्षयाधिमासः	चांदनी शर्मा	36 - 39
08	बहुमाध्यमाधारितं संस्कृतशिक्षणम्	डॉ. रमणमिश्रः	40 - 46
09	छात्राणां बौद्धिकविकासे तन्त्रयुक्तीनां प्रभावः	सस्मिता खण्डुआल डॉ. एस.एल. सीताराम शर्मा	47-50

21वीं शताब्दी में नीति शतक की शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

नितेश कुमार नागर*

सारांश :-

जीवन को सुखी समृद्ध और खुशहाल बनाना ही मनुष्य के जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। अपने जीवन से भय क्रोध घृणा अहंकार एवं द्वेष को मिटाकर अपनी उर्जा सकारात्मक कार्यों में लगाना चाहिए जिससे जीवन का मुख्य उद्देश्य प्राप्त हो सके जिससे समाज के साथ राष्ट्र भी प्रगति कर सके ।नीति शतक वर्तमान समय में उपयोगी हो गया है क्योंकि आज के समय में छात्र के साथ शिक्षक भी दिक भ्रमित होकर अपनी ऊर्जा का ह्रास करते हुए कुंठा से ग्रसित होकर अपना जीवन नष्ट कर लेता है। इसलिए उन्हें बचाने के लिए नीति शतक वर्तमान समय में उपयोगी हो गया है।

कुञ्जी शब्द - नीतिशतक, भर्तृहरि, शिक्षा, मानव जीवन, संस्कृत, शुक्रनीति, चाणक्यनीति।

संस्कृतभाषा प्राणी मात्र का हित करने वाली भाषा है क्योंकि यह भाषा प्राचीन होने के साथ-साथ सभी भाषाओं की जननी है। 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना संस्कृत कव्यों के माध्यम से जन जन तक पहुंच कर उन्हें प्रेरित करना है। संस्कृत काव्य के द्वारा मनुष्य के जीवन चरित्र का निर्माण किया जा सकता है। काव्य की रचना यश प्रदान करने वाली, अमंगल को हरने वाली, ज्ञान प्रदान करने वाली तथा अर्थ उत्पन्न करने के साथ-साथ भार्या के समान अच्छे उपदेश देने वाली होती है। अदोषता, रसवत्ता एवं रमणीयता इन तीन विशिष्टताओं से युक्त लक्षण प्रस्तुत कर संस्कृत-आचार्यों ने काव्य में भाव, कला एवं बुद्धि का समाहार किया है।

काव्यम यश से अर्थ कृते व्यवहार विदे शिवेत्तर रक्षते।
सद्यः पर निवृत्तये कांता सममित यो उपदेश युजे।।

ईश्वर के द्वारा जिस संसार की रचना की गई है वह दुख और प्रपंच से परिपूर्ण है। अर्थात इस संसार में आगमन और गमन का बुद्धि पूर्वक विवेचन होता है तो उस समय नीति ग्रंथों के अध्ययन के अभाव में मनुष्य ईश्वर को उलाहना देने के साथ-साथ प्रतिपल दुख का अनुभव करते हुए अपनी

*असिस्टेंट प्रोफेसर, महाराजा महाविद्यालय उज्जैन

जीवन लीला को समाप्त कर देता था। इसलिए इस विषय पर प्राचीन मनीषयों ने चिंतन किया कि मनुष्य का जीवन किस प्रकार सुखी बनाया जाना चाहिए इस पर विचार करते हुए प्राचीन काल में विभिन्न नीति ग्रंथो की रचना की गई जिसका प्रयोजन मनुष्य के संपूर्ण जीवन की गतिविधियों को नियम पूर्वक उचित प्रक्रिया से संपादित करना था। अतः शुक्र नीति, चाणक्य नीति, नीति शतक जैसे अनेक ग्रंथ प्रतिपादित किए गए जिसमें मनुष्य के जीवन से संबंधित संपूर्ण व्यवहारिक ज्ञान को समाहित करने का प्रयास किया गया। कौटिल्य का अर्थशास्त्र मुख्य रूप से न्याय विषयक ग्रंथ है जिसमें नीति का वर्णन किया गया है। नीति ग्रंथों की श्रेणी में याज्ञवल्लक स्मृति, मनुस्मृति, नारद स्मृति ग्रंथो की मूल रूप से गणना की जाती है। इन ग्रंथो में जीवन जीने के तरीकों आहार और व्यवहार को नाना प्रकार से व्यक्त किया गया है। श्री विष्णु शर्मा द्वारा रचित पंचतंत्र और नारायण पंडित के द्वारा रचा गया हितोपदेश कथाओं के माध्यम से नीति का सम्यक ज्ञान प्रदान करता है। चाणक्य नीति दर्पण एक विख्यात ग्रंथ है इसमें मंगलाचरण के अंत में ग्रंथ के प्रयोजन को निरूपित करते हुए ग्रंथकार ने लिखा है कि जो मनुष्य नीति शास्त्र को पढ़ता है वह अपने कर्तव्य और अकर्तव्य का भली भांति ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

अधीत्येदं यथाशास्त्रं नरो जानाति सत्तमः।
धर्मोपदेशं विख्यातं कार्याऽकार्य शुभाऽशुभम्॥

यहां पर आचार्य चाणक्य के द्वारा यह कहा गया कि हमें लोगों की मंगल कामना के लिए ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

आचार्य भर्तृहरि ने भी लोकहित की कामना से नीति शास्त्र की रचना की जो नीति शतक के नाम से प्रसिद्ध है। नीति शतक को जानने से पूर्व हमें नीति क्या है?, इसे जानना आवश्यक है।नीति मानव कल्याण के लिए समाज को सुव्यवस्थित सुखी समृद्ध बनाने के लिए जिस प्रक्रिया का उपयोग किया जाता है उसे नीति कहते हैं। चाणक्य नीति दर्पण के अनुसार नीति की परिभाषा संस्कृत में है: **"नीतिः प्रज्ञा प्रवृत्तिः"** अर्थात्, नीति वह प्रज्ञा या बुद्धिमत्ता है जो व्यक्ति को सही और उचित कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। एक अन्य परिभाषा संस्कृत में है **"नीतिर्नाम सा या लोके साधाराणी धर्मतः"** अर्थात्, नीति वह सामान्य धर्म है जो समाज में सभी के लिए समान रूप से लागू होता है। नीति शतक शब्द की संस्कृत में उत्पत्ति है **नीतिशतक = नीति + शतक।** नीति: नीति शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के "नि" धातु से हुई है, जिसका अर्थ है "निर्देश" या "मार्गदर्शन"। **"नीति"** शब्द का अर्थ है "नैतिक मूल्यों का पालन करना" या "नैतिक निर्णय लेना"। **"शतकम्"** शतक शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के "शत" धातु से हुई है, जिसका अर्थ है "सौ"। शतक शब्द का अर्थ है "सौ श्लोकों का संग्रह" या "सौ नीतियों का संग्रह"। इस प्रकार, नीति शतक शब्द का अर्थ है "सौ नीतियों का संग्रह" या "सौ नैतिक मूल्यों का पालन करने के लिए मार्गदर्शन"।

नीति शतक एक मुक्तक काव्य है और मुक्तक काव्य वह है जिसका प्रत्येक श्लोक अपने अर्थ के द्वारा प्रभाव उत्पन्न करने में सक्षम है। इसमें एक पद का दूसरे पद से कोई संबंध नहीं होता है। नीति शतक में कुल 121 श्लोक हैं जिसमे राष्ट्र एवं मानव कल्याण की भावना निहित है नीति शतक के अध्ययन मात्र से मनुष्य अपने जीवन का कल्याण कर सकता है एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। नीति शतक जीवन के कठोर अनुभव के आधार पर लिखा गया एक ग्रंथ है। तत्कालीन समाज अज्ञानता ईर्ष्या द्वेष पाखंड कठोरता क्रोध और अहंकार जैसे दुर्गुणों से ग्रसित था नीति शतक ने तत्कालीन समाज को राह दिखाई। नीति शतक के श्लोक वर्तमान समय में अपनी उपादेयता सिद्ध करते हैं।

अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विशेषज्ञः।
ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्माऽपि तं नरं न रञ्जयति।।

अज्ञ अर्थात् मुर्ख मनुष्य को सरलता से मनाया जा सकता है। विशेषज्ञ अर्थात् बहुत कुछ जानने वाले को भी प्रसन्न किया जा सकता है या सरलता से मनाया जा सकता है। परन्तु अल्पज्ञ अर्थात् थोडा सा ज्ञान पाकर अपने आपको निपुण समझने वाले व्यक्ति को भगवान ब्रह्मा जी भी प्रसन्न नहीं कर सकते हैं।

स्वायत्तमेकान्तगुणं विधात्रा विनिर्मितं छादनमज्ञातायाः।
विशेषतः सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानाम्।।

विधाता ने अज्ञानी मूर्ख मनुष्यों के लिए विद्वानों की सभा में सुशोभित रहने के लिए अज्ञान आवरक तथा अपने अधीन रहने वाला मौन को उत्तम गुण माना है।

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालङ्कृता मूर्द्धजाः।
वाण्येका समलङ्करोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते
क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।

मनुष्य की शोभा न तो आभूषणों से होती है और न ही चन्द्रमा के तुल्य हार से, न स्नानं, न चन्दनादि का लेप लगाने से तथा न ही बालों को सज्जाने और संवारने से। केवल एक मात्र संस्कार युक्त वाणी को बोलने से मनुष्य की शोभा बढती है। समय के साथ- साथ सभी आभूषण नष्ट हो जायेंगे परन्तु वाणी आभूषण एक ऐसा आभूषण है जो सर्वदा रहने वाला है।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः।।

विद्या ही मनुष्य की का सर्वश्रेष्ठ स्वरुप और अत्यंत गुप्त धन है। विद्या भोग पदार्थ देने वाली तथा यश और सुख प्रदान करने वाली है। यह गुरुओं की भी गुरु है। विद्या विदेश में भी बन्धुजन का काम करती है। विद्या परम भूततत्त्व है। राजा लोग भी विद्या की ही पूजा करते हैं, धन की नहीं, इसी कारण विद्या से हीन मनुष्य को पशु के समान माना है।

नीति शतक में सुख दुख का संपूर्ण विवेचन गंभीरता पूर्वक किया गया है जो निश्चित रूप से पथ प्रदर्शक ग्रंथ है। बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ और सर्व शिक्षा अभियान इसी से प्रेरित होकर लिया गया है। संपूर्ण विश्व में भौतिकतावादी संस्कृति का बोलबाला है इस कारण मनुष्य अपने उद्देश्य एवं लक्ष्य से भटकता हुआ प्रतीत होता है जिसमें नीति शतक मनुष्य को अपने उद्देश्यों से परिचित कराकर उसे जीवन की घोर निराशा और भय से मुक्त करा कर जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है।वर्तमान समय में छात्र एवं शिक्षक के साथ-साथ संपूर्ण समाज के लिए नीति शतक का अध्ययन उपयोगी है।नीति शतक के अध्ययन से शिक्षक अपने शिक्षण कार्य में अपने कर्तव्य का पालन उत्कृष्ट रूप से कर सकता है और छात्र भी विद्या अध्ययन पूर्ण एकाग्रतापूर्वक कर सकते हैं। इस प्रकार नीति शतक मनुष्य को कुमार्ग से हटाकर सदमार्ग की ओर प्रेरित करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :-

1. मम्मट कृत काव्य प्रकाश।
2. चाणक्यनीति
3. भर्तृहरि नीतिशतक
4. भर्तृहरि वैराग्यशतक
5. भर्तृहरि शृङ्गारशतक
6. चाणक्यनीति

सृष्टि के प्रकाश पुंज : अंधेरे के आलोक पुत्र

गौरव गौतम*

सारांश :-

किसी परिवार की उन्नति उसकी संतति पर निर्भर करती है। इसी तरह कोई समाज, कोई देश कितनी प्रगति करेगा यह उस समाज के व्यक्ति और देश के नागरिकों पर निर्भर करता है कि वह प्राप्त परम्परा का वरण कर उसे परिष्कृत करते हुए परिवर्धित करते है या प्राप्त हुई सम्पति को क्षरित होने देते है। नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने अपने ललित निबंधों के संग्रह 'अंधेरे के आलोक पुत्र' में ऐसे व्यक्तियों का वर्णन किया है जो अपने परिश्रम, तप और पुरुषार्थ से व्यक्तित्व बन गए। जिन्होंने जीते जी तो समाज की कुरीतियों, जड़ता और मूढ़ता से अलग कर बहुजन को न केवल बाहरी बल्कि भीतरी तौर पर इतना सशक्त बनाया कि कोई भी लालच, भय और प्रलोभन उन्हें सन्मार्ग के मार्ग से डिगा नहीं सकता। उनके भू लोक से जाने के बाद भी लोग उनसे प्रेरणा लेकर अपने पथ को प्रशस्त कर रहे है।

कुंजी शब्द :-

कुरीतियों, पुरुषार्थ, अंधेरे, प्रकाश, प्रभोलन, संस्कारवान, भेदभावरहित।

इस कृति में उपाध्याय जी ने 'रोम रोम में बसने वाले राम, भावपुरुष श्रीकृष्ण, वैदिक आडंबर से मुक्ति हेतु उपनिषद् से प्रेरणा लेकर समाज के चित्त को माजने वाले बुद्ध और महावीर, मध्यकाल की क्रूरता और गतिहीनता वाले समाज में लोगों को निडर बनाकर स्पंदित करने वाले कबीर और नानक जैसे भारतीय विभूति के साथ-साथ विश्व को करुणा का पाठ पढ़ाने वाले ईसा और बंधुत्व के भाव से सामाजिक विषमता मिटाने वाले पैगंबर हज़रत मोहम्मद के कर्मपथ को लालित्य के साथ शब्दबध्य करने का कार्य इस कृति में किया है। इन सभी महामानवों ने अपने देशकाल, वातावरण और परिस्थितियों का ध्यान रख अपने कर्म के लिए अलग राह चुनी लेकिन सब का उद्देश्य अपने परिवेश को शांतिपूर्ण भेदभावरहित और संस्कारवान बनाना था जिसमें कर्म और वाणी का द्वैत नहीं रहता बल्कि उनमें एकतानता होती है।

उपाध्याय जी ने कृति में वर्णित नायकों के साम्य और वैषम्य के संदर्भ में कहा है कि 'इन निबंधों के नायकों के स्वर एक से हैं, भले स्वरूप भिन्न हो। मृदंग, बांसुरी और वीणा के स्वरूप भिन्न हो सकते हैं लेकिन सा, रे, गा, मा, तो एक जैसे ही निकलेंगे। हमारी मुश्किल यह रही कि हम इन्हें इनके स्वरूप से पहिचानने लगे और इनके स्वरों की ध्वनि, स्वरूपों के यशोगानी शोर में खो गई।[1] महापुरुषों के स्वर 'शोर में खो गए' से लेखक का तात्पर्य यह है कि व्यक्ति इनकी कही बात, इनके द्वारा सुझाए पथ को स्वार्थ के तराजू में तोलकर ही अपनाता है और समाज की जडवत मनोवृत्ति की श्री में वृद्धि करता है। कुछ लोग इन महापुरुषों को आस्था नहीं विवशता के तौर पर अपनाते है ताकि वह अपने स्वार्थ को साध सके। आस्था में समर्पण का भाव होता है जो इष्ट की बात को मानने, उसके अनुरूप कर्मपथ पथ पर बढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है लेकिन ऐतिहासिक कालक्रम को देखने से यह प्रतीत होता है कि महापुरुषों के अनुयायी ज्यादातर उसी मार्ग को अपनाते है जिसका विरोध महानायकों ने किया। अनुयायी कर्मण्यता की जगह पाखंड और आडंबर का मार्ग अपनाते है इसी कारण जब वह युगपुरुषों की वाणी को लोगों तक ले जाते है तो वह निष्प्राण होती है और लोगों को जोड़ नहीं पाती है जैसे तुलसीदास और उनसे प्रेरणा लेकर महात्मा गांधी ने जिस रामराज्य की अवधारणा दी उसी को जब आज के राजनीतिज्ञ कहते है तो वह सिर्फ झूठा प्रलाप लगता है।

उपाध्याय जी ने निबंधों में महामानवों की "कर्मयात्रा का सहज चित्रण और विश्लेषण" किया है जिससे वर्तमान चिंतन पर पड़ी संकीर्णता की धूल भरी परत को झाड़ सके।" श्रीराम को जगाने के लिए प्रभाती गायी जाती है 'जागिए रघुराज कुंवर' इसी शीर्षक से एक निबंध है जिसमें लेखक का कहना है कि राम का नाम "शक्ति और ऊर्जा का पर्याय बन गया"।[2] हम इसे अपने जीवन में प्रासंगिक बनाकर न केवल जीवन को सफल बल्कि सार्थक बना सकते है। किंतु "राम जैसे युगपुरूषों के साथ यही विडम्बना जुड़ी होती है कि वे अपने जिन कृत्यो के कारण वंदनीय होते हैं, अपने समय में, बाद के समय की अकर्मण्य पीढ़ी उनके कृत्यों को अपने आचरण में न ढाल पाने की वजह से उन्हें पूजने लगती है,उन्हें वह बना देती है जो वे बनना चाहते ही नहीं थे और वे अकर्मण्यता के दबाव में बंटवारे और सांप्रदायिकता के प्रतीक बना दिए जाते हैं"।[3] 'रोम-रोम में राम' निबंध 1992 के राम जन्मभूमि आंदोलन के समय लिखा गया था। उच्चतम न्यायालय के निर्णय के बाद रामलला की प्राण प्रतिष्ठा हो चुकी है। अब हर भारतवासी का कर्तव्य है कि वह

---

[1] नर्मदा प्रसाद उपाध्याय, 'अंधेरे के आलोक पुत्र', इन निबंधों के बारे में शीर्षक से उद्धरित, श्री बेनी माधव प्रकाशन, प्रथम संस्करण - 1994।

[2]वहीं - पेज 4,

[3]वहीं - पेज 5,

श्रीराम के दर्शन से अपनी दृष्टि, चरित्र, चित्त और चिंतन को परिमार्जित करे जिससे वोटबैंक वाली धूर्त राजनीति के बहकावे में आकर जनमानस उन्मादित न हो।

इस कृति में श्रीकृष्ण से संबंधित निबंध 'देखी तेरी द्वारिका' में आधुनिक वैज्ञानिक समाज में वरदान के रूप में मिली यांत्रिकीय जीवन की ऊब को व्यक्त किया गया है साथ ही अहमदाबाद से द्वारका तक के यात्रा वृतांत का विवरण लालित्यमय शब्दों में किया गया है जिसमें पाठक भी लेखक का सहयात्री हो जाता है। वहीं 'अंधेरे के आलोक पुत्र' शीर्षक निबंध में कृष्ण के जीवन में आयी चुनौतियों और उनसे उबरने वाले कृष्ण के विराट व्यक्तित्व को व्यक्त किया है। युग का नेतृत्व करने में सक्षम वहीं हो सकता है जिसने जीवन की मुश्किलों से हार न मानी हो। जीवन की बाधाओं का सामना करने वाला ही दूसरों को भी राह बता सकता है। "बिना चुनौतियों को स्वीकारे सिर्फ बांझ ही रहा जा सकता है।" कृष्ण कुरुक्षेत्र में निहत्थे होकर भी इसीलिए डटे रहे क्योंकि उन्होंने जीवन के आरंभ से ही कंस और जरासंध जैसी आततायियों का सामना किया। इसके लिए उन्हें बहुत कुछ त्याग भी करना पड़ा जिसमें उनका वृंदावन भी शामिल था।

कृष्ण ने शांति को स्थापित करने के लिए मथुरा छोड़ा था और द्वारिका बसायी। इसके लिए वे 'रणछोर' कहलाने को भी राजी हुए। काश! स्वार्थीजन जो निजी हित के लिए पूरे समाज और राष्ट्र को युद्ध की अग्नि में झोंक देते है वो कृष्ण से यह सबक ले पाते। लेखक द्वारिका को देख प्रमुदित हो जाता है। द्वारिका के संबंध में जो भी उसने पढ़ा-लिखा और सुना है सब उसकी स्मृति में ऊभर आता है। वह भाव से सने हुए शब्दों में लिखता है कि "द्वारिका' कितने आख्यान हुए तेरे। आंखों में जाने कितने द्वापर घूम जाते हैं। कौन से द्वापर से जोड़ू अपने आपको, पौराणिक आख्यानों में वर्णित द्वापर, आध्यात्मिक विश्लेषणों की धुंध में डूबे द्वापर या भक्तिकालीन आस्था में आकंठ डूबे द्वापर। द्वापर कितने ही हों, भजनों में, भक्ति में, तर्क में या आस्था में लेकिन अडिग सत्य सिर्फ यह है कि "द्वारिका" सिर्फ तेरी है"।[4] कृष्ण की द्वारिका समुद्र किनारे है। सागर की लहरों को सुनकर लेखक को विरोधाभासी अनुभूति होती है। वह लिखते हैं - "थरथराती लहरों से लिपटे तट पर गूंजती जल ध्वनियां, लगता है सितार के सारे तार एक साथ झंकृत हुए हों, एक सांगीतिक अनुभूति, पर दूसरे ही पल लगता है कि सागर का यह हाहाकार अतीत का वर्तमान की देहलीज पर क्रंदन जैसा तो नहीं। यह रेत के कणों का आपस में गले मिलकर वहीं चीखना तो नहीं, जिसकी परिणति सागर की अथाह तरंग ध्वनियों में व्यक्त हुई हों"।[5] कृष्ण के जीवन में भी विरोधाभास व्याप्त है। कहाँ वृंदावन की कुंज गलियां और कहाँ कुरूक्षेत्र में रक्तरंजित भूमि पर रथ हांकने की विवशता। उपाध्याय जी कृष्ण के जीवन को व्यक्त करते हुए अपने समय के मानव की विडंबना को वाणी देकर कृष्ण से कहते है-

---

[4]वहीं - पेज 17,

[5]वहीं

"तुम वास्तव में गीता के कृष्ण हो, द्वंद्व के साक्षात् स्वरूप और निद्वंद्व के जागते प्रतीक। हारमोनियम पर तुम्हारे जागने और स्नान करने का वर्णन करते हुए छंद गाए जा रहे हैं। पंडितजी पूर्णतः विभोर हो, तुममे निमग्न होते हुए गा रहे हैं। यह अवसर उन्हें रोज़ मिलत्ता है जो मुझे आज सुलभ हुआ। यही है हमारे जीवन का दर्शन। कोई सिर्फ विभोर रहते हुए सारा जीवन काट देते हैं और कोई सारा जीवन इसी में गुजार देते हैं कि कभी विभोर हो सकें"।[6]

द्वारिका के बाद जब लेखक बेट द्वारिका जाता है तो उसे दोनों जगह भिन्न-भिन्न एहसास होता है। दोनों स्थलों के परिवेश की भिन्नता को उपाध्याय जी निम्न शब्दों में व्यक्त करते है -"दो भिन्न रूप एक ही द्वारिका में तुम्हारे देखे। बेट में कितने सहज, नैसर्गिक, स्निग्ध और स्नेहमय परिवेश में विराजे और यहाँ कितने दूर, अवरोधों के बीच और आवरणमय, शिल्प के इस परकोटे में बंदी से"।[7]

जीवन में कृत्रिमता का अनुपात जैसे-जैसे बढ़ता है उसी दर से हम बोझ से लद जाते है जिससे जीवन भारी हो जाता है। इससे उबरने के लिए व्यक्ति भवन से वन की ओर आता है। बुद्ध और महावीर भी जीवन की जड़ता से बचने और अन्य लोगों को भी कर्मकांड के मझधार से बचाने के लिए वन की तरफ आए अपना समस्त राजसी वैभव छोड़कर। "बुद्ध का अवतरण एक ऐसे दृढ संकल्प का अवतरण था, जिसकी मुद्रा तामसी नहीं थी। वह सौम्य, शांत, गंभीर और गरिमामय थी, क्योंकि इस मुद्रा में तात्कालिक सवालों के सीधे और सहज उत्तर निहित थे, न तो कोई विरोध निहित था न प्रतिशोध"।[8] बुद्ध का महत्व जड़बद्ध होकर उन्हें पूजने वाले भी न जान सके और न ही बामियान में उनकी मूर्ति तोड़ने वाले आतंकी। स्वयं का पथ चुनने के लिए प्रेरित करने वाले को क्या कोई तोड़ सकता है? नहीं, "तथागत ऐसे योध्दा थे, जिनसे द्वंद ही स्वयं हार गया"।[9] दुःखी की मुक्ति के लिए अष्टांगिक मार्ग देकर उन्होंने अपनी समकालीन और भावी मनुष्य की दशा सुधार करुणा और कर्म के पथ में आगे बढ़ने की दिशा प्रदान की।

बुद्ध की ही तरह महावीर ने भी केवल उपदेश नहीं दिया बल्कि अपने आचरण से संदेश दिया इसी कारण वह "मानवता के प्राणों की धरोहर" है। उनका महावीर नाम ही यह बताता है कि दूसरे के नहीं वरन् स्वयं अपनी इंद्रियों को जीतकर ही व्यक्ति महावीर होता है। विश्व आज भौतिकता की जिस अंधी सड़क पर उद्देश्यहीन दौड़ रहा है जिसका दुष्परिणाम जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिकी संकट है। इससे बचने का उपाय महावीर द्वारा बताए गए आचरण को जीवन में

[6]वहीं - पेज 18,
[7]वहीं
[8]वहीं - पेज 23,
[9]वहीं

अपनाना है जिसे भूलाकर लोगों ने महावीर को पाषाण रूप में स्मरणीय रखा है। “महाबीर का धर्म ऐसे कर्म का दैवीय स्वरूप है जो त्रिरत्नों से शोभित है। ये तीन रत्न हैं. सम्यक् ज्ञान, सम्यक् वर्णन और सम्यक् चरित्र।” उनके “कर्म का यह दैवीय स्वरूप अहिंसा,सत्य,आस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह में विराजता है” ।[10]

उपाध्याय जी की इस कृति से यह स्पष्ट होता है कि मानवीय मूल्य किसी व्यक्ति, देश समाज, संस्था, ग्रंथ के बंधुआ नहीं होते है। यह हर जगह मौजूद होते है किंतु इनका वहन वही कर सकते है जो राग-द्वेष, छल-प्रपंच, लोभ-मोह से मुक्त हो। महावीर की तरह ही ईसा ने भी ‘अपरिग्रह’ की बात की। ‘न्यू टेस्टामेंट’ में उन्होंने सरल, बेलाग तरीके से ऐसे मार्ग पर चलने को कहा जिसमें मानवता का भाव मौजूद हो किंतु जैसे सनातन धर्म में कुछ लोगों द्वारा धार्मिक ग्रंथों को कपड़े में लपेट कर उन ग्रंथों में निहित शिक्षा को व्यावहारिक रूप नहीं दिया जाता बल्कि उनके विपरीत कार्य किए जाते है उसी तरह ईसा के सहज शब्दों की दुरूह व्याख्या की गयी जिससे उनके द्वारा बताए गए करुणा भाव को परिमित किया गया व ‘अन्य’(other) की अवहेलना की गयी।

ईसा की तरह ही हज़रत मोहम्मद की शिक्षाओं की भी गलत व्याख्या कर हिंसा और जेहाद को बढ़ावा दिया गया जिसका विकृत रूप आज भी अफगानिस्तान में मौजूद है तालिबान के रूप में। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए इनके विचारों की जगह इनके प्रतिबिंब और परछाई को महत्व देने का कार्य इनके विचारों को मानने का दावा करने वालों ने किया जिससे आडम्बर और पाखंड को बढ़ावा मिला और वर्चस्व की भावना प्रबल हुई जिसका वीभत्स रूप ‘क्रूसेड’ में देखने को मिला और आज भी आतंकी हमले में दृष्टिगत होता है।

मानवीय इतिहास में यह देखा जा सकता है कि समाज को कुपथ के अंधेरे में ढकेलने वालों की संख्या ज्यादा रही है और उजाले पथ के लिए राह प्रशस्त करने वालों की कम। किंतु जैसे प्रकाश की एक किरण तिमिर को मिटा देती है वैसे ही कम समाज में भले ही कुटिल और काईयॉं लोगों की तुलना में ईमान पर चलने वाले दृढ़व्रती कम हो फिर भी अपने कृत्य से समाज का संचालन सन्मार्ग की ओर करने में वो सफल होते है जैसे नानक और कबीर हुए जिन्होंने अंधतिमिरावृत युग में खाने और सोने वाले सुखिया संसार को जागृत, सचेत और सतर्क करने का काम किया।

नानक ने ‘संगत’ और ‘पंगत’ के द्वारा भेदभाव को उन्मूलित करने का प्रयास किया। “नानक भारतीय संस्कृति के इतिहास वृक्ष पर बैठी उस कोयल की तरह है जिसके मीठे गुंजन ने वर्ग भेद, वर्ण भेद और तमाम तरह के भेदों को लेकर मच रहे कर्ण कटु शोर को दूर किया” ।[11]

---

[10]वहीं - पेज 45,
[11]वहीं - पेज 72

वहीं कबीर ने भी अपना घर जारकर समाज को आलोकित किया जिससे राम-रहीम की एकता के लिए दिशा मिली। लेकिन इन दोनों को भी अपने कुछ अनुयायियों के कर्म, वचन से दुःख मिला होगा जब यह देखते होंगे कि इन्होंने जिस मूढ़ता का विरोध कर परम्परा से रूढ़ियों को अलग किया इनके अनुयायी उसी में लिप्त है। जिस बहते नीर वाली वाणी में इन्होंने जनमानस को राह दिखाई उसमें अपने व्याख्या की बाधा डाल यह लोगों को कूपमन्डूक बना रहे है।

उपाध्याय जी ने अपनी कृति में युगपुरुषों की कर्मयात्रा को दर्ज कर लोगों को इनका निष्पक्ष आकलन करने के लिए आधार दिया है जिसमें तथ्य की प्रामाणिकता और भावों के प्रवाह का मणिकांचन योग है। इस कृति में यह संभावना है कि जन-गण इन व्यक्तियों के चरित्र को अपने चित्त में धारण कर उसे परिमार्जित कर अपना व समष्टि का जीवन आनंदमय कर सकेंगे।

जनकाव्य की चेतना के कवि त्रिलोचन

डॉ रुपाली सारये*

<u>सारांश</u> :-

त्रिलोचन जनकाव्य के धनी थे। प्रकृति और ग्रामीण चेतना उनकी कविताओं की धड़कन है। 'नगई' 'महरा' 'चंपा काले अच्छर नहीं चींन्हती' 'परदेसी के नाम पर' 'सचमुच इधर तुम्हारी याद' जैसी कविताओं में ग्रामीण एवं नगरी जीवन के परिवेश के प्रक्रिया देखे जा सकती है। अतः यह कहा जा सकता है कि दोनों ही जीवन परिपाटी की बोध अभिव्यक्ति आपके काव्य में दिखाई पड़ती है।

कुंजी शब्द :-

त्रिलोचन, प्रकृति, ग्रामीण चेतना, नगई, महरा, परदेसी, अभिव्यक्ति, कवि, करुणा, प्रेम, संवेदना।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है कि "कवि में करुणा और प्रेम का विशिष्ट भाव होना चाहिए।" साथ ही जो मनुष्य हृदय को जानकर उन संवेदनाओं को अपना समझे वही सच्चा कवि है। त्रिलोचन भी इन्हीं संदर्भों के आलोक में अपना काव्य रचते हैं। लोक जीवन लोकतंत्र की पहचान उनके काव्य में प्रस्तुत हुआ है। त्रिलोचन की साहित्य सृजन में गांव कस्बा दुख दर्द की सहानुभूति है वह ग्रामीण नैसर्गिकता का सहज बखान करते हुए कहते हैं कि -

प्रिय लगती है बहुत,घमौनी घाम देखकर,
लोग कहीं जमते हैं, गाएं और बकरियां,
खड़ी धूप में मौज लिया करती है सर्दी,
इस तरह जाती है घर से मीन-मेखकर,
आती है महिलाएं आती है सुंदरिया,
कुत्ते करते रहते हैं आवारा गर्दी,[1]

---

*सहायक प्राध्यापक हिंदी तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति विभाग देवी अहिल्या विश्वविद्यालय, इंदौर

[1]चिंतामणि: रामचंद्र शुक्ल - भाग - 1 पृ 151

यह जो ग्रामीण परिवेश है इसकी हम शहर में कल्पना भी नहीं कर सकते घमोनी का आनंद गांव में जैसा कहीं ओर नहीं,समूह बनाते लोग और चौक पर उनकी बातें , कुंए-पोखर पर मीन-मेख निकालती स्त्रियों के जमघट, गांव में बकरियां कुत्ते सभी जानवर भी उन्मुक्त है फिर भी सब में आत्मीयता है ,जीवन का आनंद है । एक जगह वह कहते हैं कि

"फूले है पलाश, सेमल, गुलाब, बनबेला
जामुन, नीम, लिसोढ़े । अभिनव दल आए हैं
पीपल-पाकड़ में ।"

स्पष्ट है कि गांव का किसान मजदूर पशुओं, वृक्ष ,लताओं से भरपूर होता है किसान जीवन कितना कठिन होता है लोगों और पशुओं का पारस्परिक सहयोग जीवन से वर्णन जुदा होता है कहीं-कहीं कवि लोकगीतों के प्रभाव में रचना करते हैं एक उदाहरण दृष्टि में है

"नव जीवन के बीच, धरातल की हरियाली
हो दिन दूनी रात चैगुनी रहने वाली ।"
"ठोक बजाकर देख लिया,
कुछ कसर न छोड़ी
दुनिया के सिक्के को बिल्कुल खोटा पाया ।"

अपनी रचना क्षमता के कारण उनके काव्य संसार व्यापक दृष्टिकोण लिए हुए हैं । प्रकृति और जीवन दोनों की ओत-प्रोत भावनाओं को जोड़े हुए हैं। जनकवि होने के साथ-साथ वह कहीं-कहीं लोकाभिव्यक्ति भी करते हैं परंतु आधुनिक भावबोध । कसे हुए शब्दों में बहुत कुछ समझ लेने की क्षमता दिखाई देती है ।

अभी हुक्के पुड़ पुड़,
बजे,उठा कर धूम,रंग आंखों में आया,
हंसिए में उत्साह,नया पहंटा वह सलटा,
कुछ मालूम हुआ न, उधर से गीत कढ़ाए
मजदूरिनों ने आम और मद से बौराया
कटहल की अरघान घड़ी

वर्तमान में वैज्ञानिक आविष्कार और आधुनिकता के बाद भी मनुष्य ईश्वर प्रकृति को अपना परिवार समझता है आकाश पिता के समान नदी को मां कहता है । गंगा मां के स्नान करने मात्र से पापों का क्षय होता है ऐसी प्रथाओं के चलते इसी लोक आस्था लिए हैं । गंगा मैया श्रद्धा और विश्वास की भावना लोक में अधिक बलवती होती दिखाई देती है । कभी-कभी यह विश्वास अंधविश्वास का रूप भी ले लेता है मानव का स्वभाव भी है कि वे युगों से होती क्रियो का अनुकरण करता है । ध्यान देने योग्य बात है कि पढ़े-लिखे लोगों के लिए भी अंधविश्वास पर्याप्त रूप में विद्यमान होता है । एक जगह वह कहते हैं -

"पढ़ना हमारे नहीं सहता पर बात मेरी कौन यहां सुनता है ।
रान परोसी कहते हैं लड़का इन्हें भारी है , इसी राह खो रहे हैं ।
पढ़ लिखकर ही आखिर फालने विक्षिप्त हुए ।
पढ़ते-पढ़ते तीन चार जने मर गए ।

अब ऐसा कहां होता है कि पढ़ने लिखने से किसी की मृत्यु हो जाए या वह विक्षिप्त हो जाए पर ईर्ष्या, द्वेष,अंधविश्वास के चलते गांव में ऐसे प्रसंग है आम है।लोक की बात हो और प्रकृति का प्रसंग ना हो ऐसा कैसा संभव है।त्रिलोचन जब बसंत वर्णन करते हैं तो पौधे की नवदल, आम की बौर,कोयल की कूक, पलाश के फूलों सभी की अगवानी पता चलती है। वैसे तो सभी कवि इन उपादानों के विषय में बोलते हैं परंतु इस वर्णन के साथ ग्राम की चौपाल की चर्चा भी वह करते जाते हैं वह कहते हैं-

"चौपाल की लहर में बोल-डोल के उठे।
गांवों ने फाग गाकर कहा आ गया वसंत । ।"

किसान को बसंत का आनंद तब और बढ़ जाता है जब वह देखता है की फसल तैयार है क्योंकि हर त्यौहार-ऋतु खेती किसानी से ही जुड़े होते हैं। यह सभी उसका जीवन है और एक स्थान पर कवि कहता हैं-

" चैती अब पककर तैयार है, खेतों में रंग बदल गए हैं।
मटर उखड़ रही है, गेहूं जौ खड़े हैं ,हवा में झूम रहे हैं।
हवा की लहरों पर धूप का पानी चढ़ जाता है।
फूले है पलाश, वैजयंती, कचनार, आम। चिर्लाबल अब
कंकड़ है , पीपल, शिरीष, नीम का भी यही हाल है।

स्पष्ट है कि यहां लोग जीवन को प्रकृति के माध्यम से देखने का प्रयास हुआ है किस की भावनाएं समझने के लिए हमें उसे परिवेश और माटी से जुड़ना होगा इन अनुभवों के वर्णन में कहीं-कहीं उपदेश भी दिखाई देते हैं परंतु योगेश कहीं ना कहीं रूढ़िवादी भावना देश के विकास में अवरोध बन जाते हैं। हमें आगे बढ़ाने के लिए बहुत से आप पुरातन परिवर्तित करना होगा जिससे व्याप्त बुराइयों का अंत होने लगेगा। वर्तमान में आवश्यकता है नए युग में नए विचारों की ।यही कारण है कि कवि कहते हैं-

"ये नए युग से अपरिचित और सशंकित
ये गए सब दिन सताए
चल रहे प्राचीनता से लौ लगाए
एक अपनी ही नई दुनिया बसाए
आज भी इनको पुरानी बात पहले रूप में ही
भा रही है भा रही है भा रही है ।"

यहां कभी अंधविश्वास की चली आ रही परंपराओं के प्राचीन रूप से सचेत कर रहा है और कह रहा है कि हमें पुरातन को बदलने की आवश्यकता है। कवि कर्मों और उससे मिलने वाले फल की भी बात करता है कभी आध्यात्मिक है वह धर्म को जानता है संस्कृति को मानता है परंतु जो गलत है उसको स्वीकार नहीं करता कवि कहते हैं मनुष्य को अपनी तपस्या का पुण्य अवश्य प्राप्त होता है इसलिए त्रिलोचन श्रम और संघर्ष की बात करते हैं-

धूप कठिन सर -ऊपर, थम गई हवा है जैसे
दोनों दूजो के ऊपर,रख पैर खींचते पानी,
उसे मलिन हरी धरती पर, मिलकर वे दोनों पानी
दे रहे हैं खेत में पानी।

जीवन का महत्वपूर्ण पहलू श्रम है जो संघर्ष के बिना संभव नहीं धरती के प्रति अपने स्नेहा को सौंदर्य श्री हार्दिक जी कभी कहते हैं जब देखे तब पे दूरियां जिन्हे जाने के खेत का खेत का मन श्रमजीवी कभी शम से नहीं घबराते उनके लिए स्वयंवर संघर्ष जीवन की अनिवार्यता है दोनों के काम बाते हैं फिर भी एक दूसरे का सहयोग करते हैं त्रिलोचन की कविता के संघर्ष पत्र नगर निराहिनी केवट निषाद सनी ही सब्जी वाला बुढ़िया जैसे कई चरित्र के सामने लोगों की स्थिति को दर्शाते हैं।

निष्कर्षः -

त्रिलोचन अपनी काव्य रचनाओं में कोई भी बात स्पष्ट रूप में बयां करते थे। बातों को घूमाकर कहना उनकी आदत में नहीं था। यथार्थ का अंकन ही उनकी विशेषता है वह कहते हैं-

"कोई भूखा हो तो उसको ला कर रोटी
दो, मत लंबी चौड़ी बात बनाओ इसकी उसकी। "

किसी ने सही कहा है कि त्रिलोचन साहित्य के हनुमान है। इन कि राजनशीलता से बात सत्य प्रतीत होती है। सहजता के साथ-साथ फक्कड़ स्वभाव और समाज के गरीब टपके के प्रति संवेदनशीलता इनको महनीय बनाती है। इनके इसी स्वभाव के कारण सुप्रसिद्ध आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा कहते हैं -

"त्रिलोचन जिस खास अर्थ में आधुनिक हैं, वह यही गरीबी से उनकी कविता का नाता है। नयी कविता ने अपने लिए जो परिधि बनाई, उसने जनता के दुख- दर्द को उससे बाहर रखा। त्रिलोचन की कविता इस परिधि को तोड़ती है।

स्पष्ट कहा जाए तो भाषा की दृष्टि से हिंदी को समृद्ध करने का श्रैय त्रिलोचन को दिया जाएगा। उन्होंने देशज शब्दों को साहित्य गरिमा के आवरण में समेटा है।

संदर्भ सूची:

1.

2. बात मेरी कविता: त्रिलोचन, पृष्ठ क्रमांक - 22
3. त्रिलोचन संचयिता, सम्पादक-ध्रुव शुक्ल पृ - 094
4. त्रिलोचन संचयिता, सम्पादक-ध्रुव शुक्ल पृ0 - 77।
5. वही पृष्ठ क्रमांक - 52
6. अरधान -त्रिलोचन शास्त्री यात्री प्रकाशन नई दिल्ली पृष्ठ क्रमांक - 58
7. धरती पृष्ठ क्रमांक - 82
8. गुलाब और बुलबुल पृष्ठ क्रमांक - 56
9. चैती पृष्ठ - 48
10. धरती पृष्ठ क्रमांक - 25
11. धरती पृष्ठ क्रमांक - 18
12. उस जनपद का कवि हूँ -
13. त्रिलोचन के बारे में, रामविलास शर्मा का लेख, त्रिलोचनः आधुनिक और परंपरा बोध, पृ.55.

महादेवी वर्मा के काव्य में विरह रूप

डॉ. प्रतिभा जोशी*

छायावादी युग की आधार स्तम्भ महादेवी वर्मा ने कविता के माध्यम से स्वयं को, समाज को, विश्व को और अदृश्य परमेश्वर को जानने की कोशिश, की। वे पहली स्त्रीवादी साहित्यकार है जिन्होंने नारी वेदना के अतिरेक कारणों को अपनी लेखनी के माध्यम से सरस रूप से व्यक्त किया। महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा भी कहा गया है। उनकी कविताओं में अलौकिक प्रेम की विरह वेदना की अनुभूति होती है। 'नीरजा' में वे जीवन को विरह का जल जात कहती हैं विरह पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति इन पंक्तियों से स्पष्ट होती है:-

विरह का जलजात जीवन, विरका जलजात।

वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास,

अश्रु चुनता दिवस इसका अश्रु गिनती रात।

जीवन विरह का जलजात।

विरह वेदना की एक ओर अभिव्यक्ति के जिसको उन्होंने प्रकृति समान माना है-

कैसा पतझड़ कैसा सावन,

कैसी मिलन विरह की उलझन,

कैसा पल घड़ियोंमय जीवन,

कैसे निशि-दिन कैसे सुख-दुख

आज विश्व में तुम हो या तम।

टूट गया वह निर्मम दर्पण।

---

*अतिथि प्राध्यापक हिन्दी तुलनात्मक भाषा एवं संस्कृति अध्ययनशालादेवी अहिल्या विश्वविद्यालय इन्दौर (म. प्र.)

इन पंक्तियों के माध्यम से विरह की वेदना में कोई ऋतु सुहानी नहीं लगती है। महादेवी जी ने विरह में वियोग करने वाले में ही प्रियतम की झाँकी प्रस्तुत की है। 'नीरजा' में उन्होंने अपनी कविता 'तुम मुझ में प्रिय परिचय क्या' के माध्यम से ही विरहणी के अंतर्मन में प्रिय के दर्शन करवाए हैं।

तुम मुझमें प्रिय। फिर परिचय क्या।

तारक में छवि प्राणों में स्मृति,

पलकों में नीरव पद की गति,

लघु उर में पुलकों की संसृति.

भर लायी हूँ तेरी चंचल

और करूँ जग में संचय क्या।

तुम मुझमें प्रिय। फिर परिचय क्या।

महादेवी जी की कविता में उनकी स्वयं की पीड़ा परिलक्षित होती है। जिस समय महादेवी का जन्म हुआ उस समय कन्या का जन्म अशुभ माना जाता था। ऐसी विषम परिस्थितियों और विडम्बनाओं के बीच महादेवी जी का जीवन व्यतीत हुआ। वे मीरा की तरह हमेशा अपने गिरधर के विरह में व्यथित रहीं। लेकिन मीरा की पीड़ा मीरा तक ही सीमित थी, परन्तु महादेवी की पीड़ा समस्त नारी जाति की पीड़ा है। उनकी कविता में स्त्री की कविता है जिसमें नायिका के पास संपत्ति के नाम पर आँसू और विरह तो है ही लेकिन इसमें कभी-कभी अभिमान भी झलकता है-

मिलन मंदिर में उठा हूँ

जो सुमुख में सजल गुण्ठन।

मैं मिटूँ प्रिय में मिटा ज्यों

तम्प सिकता में सलिल कण।

सजनि, मधुर निजत्व दे

कैसे मिलूं अभिमानिनी मैं।"

अभिमान होने पर भी कभी वियोगिनी का हृदय अपने कठोर प्रियतम के दर्शन का अभिलाषी है-

दीप सी युग-युग जलूँ, पर वह सुभग इतना बता दे,
फूँक सी उसकी बुझें, तब झार ही मेरा पता दे।

महादेवी जी लिखती हैं कि दुःख उनके निकट जीवन का काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। 'रश्मि' की भूमिका में वे लिखती है" हमारे असंख्य सुख हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी ना पहुँचा सके, किन्तु हमारा एक बूंद आँसू भी जीवन को अधिक मधुर, अधिक उर्वर बनाए बिना नहीं गिर सकता।" इसलिए वे अपने प्रियतम के लिए कहती हैं कि

"तुम दुख बन इस पथ से आना।"

जब पीड़ा अपने चरम पर पहुँचती हे तभी सुख की अनुभूति होती है।

पर शेष नहीं होगी यह, मेरे प्राणों की क्रीड़ा,
तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुम में ढूँढेगी पीड़ा।
चिर ध्येय यही जलने का
ठंडी विभूति बन जाना है पीड़ा की सीमा यह
दुख का चिर सुख हो जाना।

महादेवी जी को दुःख के दोनों रूप प्रिय है वह जो मनुष्य की संवेदनाओं से पूर्ण हृदय को सारे संसार के एक मजबूत बंधन में बाँध देता है और दूसरा वह जो समय और सीमा के बंधन में पड़े हुए असीम चेतन के क्रन्दन को स्वीकार करता है।

महादेवी का व्यक्तिगत दुःख सर्वत्र अध्यात्म की ऊँचाईयों को स्पर्श करता है

मेरे हँसते अधर नहीं जग
की आँसू लड़ियाँ देखो।
मेरे गीले पलक छुओ मत
मुर्झाई कलियाँ देखो।

'नीरजा' और सांध्यगीत' में यह दु'खवाद अत्यंत सघन रूप से दिखाई देता है।

महादेवी का काव्य व्यक्तिगत संघर्ष और बुद्ध के दुखवाद से प्रेरित दिखाई देता है। वे दुःख को मधुर भाव से स्वीकार करती हैं उनका दुःख मधुर पीड़ा का भार है जिसे वह वहन करती है-

'मृग मरीचिका के चिर पथ पर,
सुख आता प्यासों के पग घर,
रुद्ध हृदय के पट लेता कर,

बुद्ध की करूणा निवृत्ति मूलक है और महादेवी की प्रवृत्ति मूलक है। वे पीड़ा में ही सुख की अनुभूति करती हैं। वे आत्मा को नित्य मानती है तथा अमरत्व में उनकी आस्था भी है। लेकिन क्षणभंगुर होते जीवन को बौद्ध मतानुसार ही स्वीकारती हैं—

जब असीम से हो जायेगा
मेरी लघु सीमा का मेल,
देखोगे तब देवी अमरता,
खेलेगी मिटने का खेल।

इस तरह महादेवी का काव्य बौद्धवाद से प्रेरित या प्रभावित दिखाई देता है, जिसे तरह 'कबीर' भी बौद्धवाद से प्रेरित पंक्तियाँ लिखते है-

काहे री नलिनी तू क्यूँ कुम्हलानी,
तेरे हो नाल सरोवर पानी।

स्त्री के विभिन्न रूप महादेवी के काव्य में परिलक्षित होते हैं। उनके अनुसार नारी, मात, भगिनी, पत्नी, पुत्री आदि रूपों में कोमल एवं कठोर भावनाओं के साथ जीवन व्यतीत करती है स्त्री के विभिन्न रूप महादेवी के काव्य में परिलक्षित होते हैं। उनके अनुसार नारी, मात, भगिनी, पत्नी, पुत्री आदि रूपों में कोमल एवं कठोर भावनाओं के साथ जीवन व्यतीत करती है-

मैं नीर भरी दुःख की बदली
विस्तृत नभ का कोई कोना
मेरा न कभी अपना होना
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल भी, मिट भी आज चली।

इस तरह महादेवी की कविताओं में रहस्यवाद भी स्पष्ट रूप से झलकता है, जैसेः-

'जग पतझर का नीरव रसाल, पहने हिम जल की अश्रुमाल,
मैं पिक बन जाती डाल-डाल सुन फूट-फूट उठते पल-पल सुख-दुख मंजरियों के अंकुर।'

प्रकृति को चेतन बनाकर महादेवी ने उसकी जड़त्ता को दूर करके एक सरस संसार बना दिया है यही छवि प्रसाद की कामायनी में देखने को मिलती है-

नीचे जल था ऊपर हिम था, तरल था एक सघन,

एक तत्व की ही प्रधानता कहो उसे जड़ या चेतन।

इस तरह महादेवी जी ने बौद्धवाद, रहस्यवाद के साथ-साथ अपनी कविताओं और गीतों में करूणा को भी विशेष रूप से स्थान दिया है वे अभिशप्त नारी के अछूते बचपन, असमय ढलते यौवन व तिरस्कार सहने बुढ़ापे का करूण वर्णन करती है-

मैं कंपन हूँ तू करूण राग

मैं आँसू हूँ तू है विषाद

कहता है जिनका व्यथित मौन हम-सा निष्फल है आज कौन?

निर्धन के घन सी हास रेख जिनकी जग ने पानी ने देख

उन सूखे होंठो के विषाद में मिल जाने दो हे उदार

फिर एक बार बस एक बार

महादेवी वर्मा का समग्र साहित्य करूणा से परिपूर्ण है। उनका स्त्री मन करूणा की कांति से पूर्ण है। वे जीवन रूपी बालका को संसार में क्रीड़ा हेतु भेजती हैं लेकिन जब बालक संसार की कठिनाईयों या काँटों से बिंध जाता है तब वह माँ के रूप में उसे अपने आँचल का आश्रय भी देती है-

पलकों पर घर-घर अगणित शीतल

अपनी साँसों से पोंछा वेदना के क्षण

हिम स्निग्ध करों से बेसुध प्राण सुलाया।

महादेवी का यही करूण एवं संवेदनशील भाव उन्हें दूसरों से भिन्न है। उनके अनुसार नारी जीवन समर्पण का नाम है। वे भारतीय नारी का प्रतिमान थीं। अंत में हम कह सकते हैं कि महादेवी जी के काव्य में प्रकृति चित्रण, बुद्धवाद, स्त्रीवाद व रहस्यवाद के दर्शन होते हैं। स्त्री के मन की अंतर्वेदना व पीड़ा का ज्ञान व अनुभव उन्हें अपने युग से मिला था उनका यही ज्ञान व

अनुभव उनकी काव्य कृतियों में परिलक्षित होता है। वे बीसवीं सदी की ऐसी महान् कवयित्री थीं जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त था। महादेवी की काव्य रचनाएँ छायावाद की मूल्यवान उपलब्धि है। महादेवी वर्मा एक सफल रहस्यवादी कवयित्री यथार्थवादी गद्यकार, समन्यवादी आलोचक होने के साथ-साथ संस्मरण लेखिका, सामाजिक एवं ललित निबंधकार तथा समाज एवं राष्ट्रसेविका थी। हिन्दी साहित्य में उनका चहुँमुखी व्यक्तित्व व उनकी रचनाएँ सदैव अविस्मरणीय हैं।

Environmental Awareness in the poetry of Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank'

Shraddha Choudhary*

Abstract :-

Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank' was born on July 15, 1959, in Uttarakhand. His parents, Paramanand Pokhriyal and Vishambhari Devi, were instrumental in shaping his early life. Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank, pursued an M.A. degree and began his career as a teacher. He has a PhD owners' degree along with D.Litt. He entered politics in 1991, serving multiple terms as an MLA and as the Chief Minister of Uttarakhand from 2009 to 2011. In 2019, he became the Union Minister for Human Resources Development, later renamed the Union Education Ministry, serving until July 2021. He is also an accomplished author, having written around 44 books in Hindi, some of which have been translated into other languages.

Keywords :-

Ramesh Pokhriyal 'Nishank', Uttarakhand, Hindi, Education, Environment, human civilization, culture.

INTRODUCTION :-

The entire existence of human life is based on the balance of the environment or we can say that the environment is the foundation of human life. The balance of man with the environment paves the way for a developed life, while the imbalance of man with the environment will be the main reason for the destruction of the entire human race and

---

*Research scholar at School of Comparative Languages and Culture, DAVV, Indore (M.P)

human resources. We should advance the pace of development by achieving unity with sensitivity towards the environment. The living and non-living things in nature are connected to the environment in some way or the other.

Environment is a universal concept, which coordinates the entire organic and inorganic world. The natural resources that man uses for his activities are in some way or the other connected to the environment and nature. Every behaviour of man is connected to the environment. Therefore, all the activities of man have an impact on the environment. In the present times, the balance of the environment has been disturbed due to the exploitation of nature and environment by man. Which is very frightening for the existence of man. The problem of environmental pollution has become a serious problem for the existence of human civilization and culture.

The two most crucial aspects of life are knowledge and action. Transforming it into action is a difficult task. Ramesh Pokhriyal 'Nishank' is one such creator who does not differ in his work and writing. Doubtless he is among those who have climbed the political ladder and run on the literary trail.

This dual commitment to knowledge and action is not unique to Nishank; rather, it reflects a broader trend among individuals who navigate the complex interplay between politics and literature.

Many writers find themselves at this crossroads, where their literary endeavours serve as both a mirror of society and a vehicle for social change. For instance, just as Ramesh Pokhriyal Nishank's works often resonate with his political ideologies, so too do countless authors use their narratives to challenge societal norms and inspire collective action, akin to how literature has historically captured the essence of its time and influenced public discourse. This symbiotic relationship highlights the essential role that creative expression plays in shaping our

understanding of reality and motivating us towards meaningful engagement with the world around us.

Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank' was born on July 15, 1959, in Uttarakhand. His parents, Paramanand Pokhriyal and Vishambhari Devi, were instrumental in shaping his early life. Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank, pursued an M.A. degree and began his career as a teacher. He has a PhD owners' degree along with D.Litt. He entered politics in 1991, serving multiple terms as an MLA and as the Chief Minister of Uttarakhand from 2009 to 2011. In 2019, he became the Union Minister for Human Resources Development, later renamed the Union Education Ministry, serving until July 2021. He is also an accomplished author, having written around 44 books in Hindi, some of which have been translated into other languages.

Nishank is a prominent figure in contemporary Hindi literature, exhibits a distinctive writing style that blends traditional elements with modern sensibilities. His poetry often draws on classical Hindi forms, such as 'Dohe' and 'Kavita,' which allows him to honour the rich heritage of Hindi literature while adapting it to contemporary themes. This fusion is evident in his exploration of traditional motifs like love, nature, and spirituality, which he integrates with a modern perspective, creating a dialogue between past and present.

Nishank's poetry is a heartfelt tribute to India's beauty, culture, and traditions. His poems often celebrate the stunning landscapes of India, from the mountains of Uttarakhand to the peaceful riverbanks and colourful festivals. Through his writing, he helps readers appreciate the diverse and rich scenery of his homeland. Nishank's poetry also explores deep emotions and spiritual ideas. He writes about love, loss, and life's challenges with a gentle touch, showing a deep understanding of human feelings. His poems touch on the complexities of our inner lives and offer thoughtful reflections on what it means to be human.

One of the special things about Nishank’s poetry is how he makes his writing easy to understand. Even though his themes are profound, he uses simple and clear language. This makes his poems accessible to people from all walks of life, allowing everyone to connect with his words and find personal meaning in them. Nature is a big part of Nishank’s poetry. He often uses images from the natural world, especially the landscapes of Uttarakhand and other parts of India. This connection to nature adds beauty to his poems and helps readers feel more connected to the places he describes.

Many of Nishank’s poems are also uplifting and motivating. He often encourages readers to stay strong and keep going even when facing difficulties. His work carries messages of hope and perseverance, inspiring people to overcome challenges and strive for their best.

In the poetry collection 'Srijan Ke Beej' (सजन के बीजृ), Dr. Ramesh Pokhriyal Nishank has expressed the various colours of his poetic practice. This collection of poems has become a symbol of Nishank's lofty thoughts. Readers get introduced to the colours of poetry filled with patriotism, social welfare, description of others' suffering and love for the environment. While reviewing this poetry collection, Dr. Muniram Saklani writes that "Srijan Ke Beej is not a poem, but a movement, which has a way to connect with society, nature and earth. These poems fly on the wings of imagination in many emotional waves and land on the ground of reality." In this poetry collection, Nishank has expressed sensitivity towards environmental elements. He presented his thoughts in the context of important topics like uniform approach towards the environment, collection of environmental wealth, existence of the environment and loving behaviour with the environment in the context of animals and birds.

In the poem 'Survekshan Laksar' (सर्वेक्षण लक्सर) of the present collection, the poet has poetically expressed a survey of Laksar, a district of Uttarakhand state. After the survey, he has expressed concern about the environmental condition in Laksar. The Kedarnath tragedy is a great

example of nature's horror. The number of tourists in Kedarnath, the increase in garbage by those tourists, resulting in climate change.

Describing the horror of nature, Nishank writes that:

कैसी विवशता
है ये कि अपने
बसेरो को
छोटे छोटे जानवरों
के बच्चो को
अपने ही सामने
देख रहे हो डूबते हुए
माँ, बहन, बच्चे,
बूढ़े और मेरे प्यारे
पश-पक्षी किस तरह इस
प्रकृति कि विभीषिका से बच पाते।

All physical power is nothing in front of the power of the environment. Hence, man must recognize the power of the environment and avoid making the environment unbalanced.

In the poem 'Tumhi Ko Karna Hai' (तम्हीं को करना है), Nishank has accepted nature as the almighty element and has presented the point of proper use of environmental wealth. Environment is a never-ending storehouse of God-given natural wealth. It needs to be properly managed with discipline. In the present times, the form of elements like air, water, soil etc. has changed into commercial elements. Man does not have a monopoly on all these elements of the environment. In this poem, the poet has talked about the environment created by God, which has created everything for the existence of our life and has handed it over to us; then we should save the environment and protect it.

भगवान् ने बनाया है

सब कुछ तुम्हारे लिए

हर चीज़ दी है

तुम्हे खुलकर तुम्हारे लिए

पूरी प्रकृति तुम्हारे सामने है

और तुम उसके पास हो

Many environmentalists like Sunderlal Bahuguna, Medha Patkar, Amritadevi Bishnoi and Tulsi Gowda have spent their entire wealth to save the world by protecting the environment. They have always been working in this context to create awareness among humans for environmental protection. In the poem 'Sansaar Yatra' (ससार यात्रां), Nishank has tried to establish the conflict between the environment-loving and anti-environmental mentality in harmony like this:

हर चीज़ का अपना महत्व है

चाहे वो आकार या हो निराकार

कुदरत द्वारा सृजित नदी,

पहाड़ और झरने बहते है,

जिव-जंतु, पशु-पक्षी सहित

सभी अच्छे-बुरे लोग रहते है।

Nishank expresses in his poem 'Apni Zameen' (अपनी जमीन), that humans should not destroy the environment but become a link to connect the environment. Instead of being the master of this earth-nature, humans should ensure their respective places for all natural elements. Understanding this, humans should always work towards the environment protection. The lines from the poem are like this:

इस बड़ी सी दुनिया में

तुम्हारा भी एक स्थान है,

तुम्हे तो कड़ी बनना है

जमींन और आसमान की,

भौतिकवादी सुख नहीं बल्कि

तुम्हारीं कमाई तो सम्मान की।

God has created edible things in the food cycle of humans. Away from that, just to enjoy, they kill creatures like snake, monkey, pig, cow, buffalo, scorpion, hippopotamus and enjoy the food. How cruel is the destiny of humans towards the environment? The expression of these feelings is found in the poetic lines presented by Nishank:

बेजुबान ही सही

पर मेरे दोस्त,

ये भावो से भरा होता है।

Destruction of wildlife wealth has emerged as a major environmental problem. Hunting for entertainment, ruthless killing of wildlife for valuables etc. are the practices being carried out by humans. All these activities should be immediately stop as to save our environmental assets.

In conclusion, Nishank's poetry is a powerful reminder of how closely connected we are to the environment. Through his beautiful and thoughtful verses, he celebrates the wonders of nature and encourages us to care for all living things. He highlights the importance of taking care of our planet, including our air, soil, and water, showing how crucial it is to protect these resources for future generations. His poems not only add to the beauty of literature but also inspire us to take responsibility for looking after and preserving our world.

भारतीय ज्ञान परम्परा तथा पाश्चात्य मनोविज्ञान में स्वप्न विश्लेषण

डॉ कपिल भार्गव*

सारांश :-

आधुनिक मनोविज्ञान के जनक सिग्मंड फ्रायड ने भारतीय मनोविज्ञान के विषय में कहा है कि हम मनोविज्ञान की जिस परत तक अभी तक पहुंच पाए हैं भारतीय मनोविज्ञान उससे कहीं आगे रहा है, हमने मन की तीन ही परतों के विषय में संसार को स्पष्ट किया है जो हैं चेतन, अवचेतन एवं अचेतन मन। मन के विषय में हम इससे अधिक गहरी अवधारणा में जा ही नहीं पाए। और यही अवधारणा फ्राइड के शिष्य जंग की भी कहीं ना कहीं रही है। दोनों ने ही मनोविज्ञान के संदर्भ में बार-बार भारतीय पक्ष को अवश्य ही रखा है। ज्ञम जानते हैं कि भारतीय मनोविज्ञान में मन को अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनंदमय कोश में विभाजित किया गया है। शरीर के अंदर चार शरीर और विद्यमान हैं। इन सभी को मिलाकर पंचकोश कहा गया है। भारतवर्ष में ध्यान की परंपरा वैदिक काल से रही है और विश्व में जहां भी यह परंपरा है वह केवल भारतीय ज्ञान परम्परा की ही देन है। सार यह हुआ कि जब उन्नीसवीं शताब्दी में पाश्चात्य विद्वानों ने मनोविज्ञान और मन के विषय में विश्लेषण करना प्रारंभ किया उसके हजारों वर्ष पूर्व ही भारतीय मनीषियों ने मनोविज्ञान पर एक बृहद विवेचना की थी। यह तो सिद्ध है कि दोनों ही चिंतन परम्पराएँ हमें स्वप्नों के विश्लेषण की दिशा अवश्य दिखातीं है जिन्हें व्यापक रूप से समझने की आवश्यकता है।

कुञ्जी शब्द :- भारतीय ज्ञान परम्परा, मनोविज्ञान, स्वप्न, मानव, मनश्चिकित्सा, मनोविश्लेषण, ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।

स्वप्नों की विविध अनुभूतियां मानव को होती हैं इनका संबंध उसके जीवन में घटी घटनाओं अथवा चेतन और चेतन या अचेतन की अनुभूतियों पर निर्भर करता है भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद, वेदांग, उपनिषद् , ज्योतिष, आयुर्वेद, योग आदि के अनुरूप कारकों का निर्धारण किया गया है।

*संस्कृत अध्यापक, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्र.-1, भोपाल

कुछ स्वप्न क्षणिक होते हैं जो नींद खुलते ही विस्मृत हो जाते हैं। कुछ ऐसे होते हैं जिनमें यह भी याद नहीं होता कि हमने स्वप्न देख भी है। और कुछ की स्मृतियां सुदीर्घ समय तक हमारे स्मृति पटल पर बनी रहती हैं। इसका निर्धारण भी स्वप्न के कारक ही विवेचित कर सकते हैं। उधर पाश्चात्य मनोविज्ञानिकों में स्वप्न विश्लेषण, मनोविश्लेषण की एक तकनीक है जिसके ज़रिए सपनों के छिपे अर्थों को समझा जाता है. इसका लक्ष्य सपनों में छिपी अचेतन इच्छाओं, विचारों, और भावनाओं को उजागर करना होता है. स्वप्न विश्लेषण, सिगमंड फ्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत पर आधारित है. फ्रायड के मुताबिक, सपने दमित इच्छाओं और संघर्षों की अभिव्यक्ति होते हैं. स्वप्न विश्लेषण का इस्तेमाल मनोचिकित्सा के अलावा, जुंगियन, गेस्टाल्ट, संज्ञानात्मक व्यवहार, और कला चिकित्सा जैसे चिकित्सीय ढांचे में भी किया जाता है।

स्वप्न विश्लेषण के ज़रिए, सपनों में मौजूद अचेतन प्रेरणाओं, संघर्षों, या छिपे हुए अर्थों को सामने लाया जाता है। स्वप्न विश्लेषण की मदद से, सपनों की प्रकट सामग्री और अव्यक्त सामग्री को उजागर किया जाता है। स्वप्न के बारे में लिखते समय, उसमें विद्यमान हर छोटी-बड़ी बात को लिखना चाहिए। जैसे आज दिनांक 30 दिसम्बर 2024 को मैंने स्वप्न में अपने पिताजी को इतनी सहजता से देखा जैसे मेरी स्मृतियाँ उनके साथ संकलित हैं। मुझे स्वप्न में ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सब वैसा ही है जैसे पिताजी के सन् 2017 में पंचतत्व में विलीन होने के पूर्व था। वही अनुशासन, वही स्नेह और वही संबंधात्मक तादात्म्य जो उनके होने पर था। लेशमात्र भी उनके न होने की प्रतीति स्वप्न में नहीं थी। सब वैसा का वैसा ही जो उनके साथ होने पर होता है। और आज इस स्वप्न के आने का कारण भी उनके कल स्मरण से कहीं न कहीं जुड़ा ही होगा। मुझे भी विभिन्न प्रकार के स्वप्न आते हैं परन्तु सर्वाधिक प्रभावित माता-पिता, दादा-दादी के सुदीर्घ साहचर्य और अवचेतन में उनकी स्मृतियों से जुड़कर आने वाले स्वप्न ही करते हैं। और यह कहीं न कहीं स्वप्न विश्लेषण के सिद्धांतों से अवश्य ही जुड़े हुए हैं। आइये समझने का प्रयास करते हैं -

- ☐ **भारतीय ज्ञान परम्परा के अनुसार -**

"चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत" यह मंत्र यजुर्वेद के पुरुषसूक्त से लिया गया है। यह मंत्र ऋग्वेद, और अथर्ववेद में भी मिलता है :- ऋग्वेद 10/90/13, अथर्ववेद 19/6/0/7। इसका पूरा रूप है :-

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत,
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत,
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकान् अकल्पयन्।।

इसका अर्थ है कि (मनसः-चन्द्रमाः जातः) समष्टि पुरुष के मनन सामर्थ्य से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ। (चक्षोः-सूर्यः-अजायत) उसके ज्योतिर्मयस्वरूप से सूर्य उत्पन्न हुआ है, श्रोत्र से वायु तथा प्राण और हृदय से यह सम्पूर्ण जगत् उत्पन्न हुआ।

इस मंत्र के अर्थ से हम यही कह सकते हैं कि मानव की सृष्टि में चैतन्य की उपादान कहीं ना कहीं प्रकृति से ही जोड़े गए हैं। जीवन पद्धति के विभिन्न विषयों को इतनी ही गंभीरता से भारतीय मनीषियों ने समझा परखा था ज्ञान को लोकार्पित किया। पाश्चात्य मनोविज्ञानिकों में सिगमंड फ्रायड (6 मई 1856 - 23 सितंबर 1939) को मनोविज्ञान के मनोविश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का संस्थापक माना जाता है, जो मानव व्यवहार को समझाने के लिए अचेतन ड्राइव को देखता है। फ्रायड का मानना था कि मन सचेत और अचेतन दोनों तरह के निर्णयों के लिए जिम्मेदार होता है, जो वह मनोवैज्ञानिक ड्राइव के आधार पर करता है। इद , अहंकार और सुपर-अहंकार मन के तीन पहलू हैं, जिनके बारे में फ्रायड का मानना था कि वे किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। फ्रायड का मानना था कि लोग "अपने मन के नाटक में बस अभिनेता हैं, जो इच्छा से प्रेरित होते हैं, संयोग से खींचे जाते हैं। सतह के नीचे, हमारा व्यक्तित्व हमारे भीतर चल रहे शक्ति संघर्ष का प्रतिनिधित्व करता है"।

मनोविश्लेषण की स्थापना सिगमंड फ्रायड ने की थी। फ्रायड का मानना था कि लोगों को उनके अचेतन को एक सचेत विचार और प्रेरणा बनाकर और उसके द्वारा "अंतर्दृष्टि" प्राप्त करके ठीक किया जा सकता है। मनोविश्लेषण चिकित्सा का उद्देश्य दमित भावनाओं और अनुभवों को मुक्त करना है, यानी अचेतन को सचेत बनाना। सिगमंड फ़्रायड के मनोविश्लेषणात्मक सिद्धांत के अनुसार, मानव व्यवहार अचेतन विचारों, इच्छाओं, यादों, और भावनाओं से प्रभावित होता है। फ़्रायड ने मनोविश्लेषण की स्थापना 1890 के दशक की शुरुआत में की थी।

सरल शब्दों में, फ्रायड का सिद्धांत बताता है कि मानव व्यवहार अचेतन यादों, विचारों और आग्रहों से प्रभावित होता है। यह सिद्धांत यह भी प्रस्तावित करता है कि मानस में तीन पहलू शामिल हैं: इद, अहंकार और सुपरइगो। इद पूरी तरह से अचेतन है, जबकि अहंकार चेतन मन में काम करता है। सुपरइगो अचेतन और सचेत दोनों तरह से काम करता है। फ्रायडियन मनोविज्ञान के साथ-साथ मनोविश्लेषण में प्रमुख अवधारणाओं जैसे अचेतन, निर्धारण, रक्षा तंत्र और स्वप्न प्रतीकों के बारे में अधिक जानने से आपको समकालीन मनोवैज्ञानिकों पर फ्रायड के सिद्धांतों के प्रभाव को समझने में मदद मिल सकती है।

भारत की परंपरा के अनुसार चंद्रमा मन का कारण होता है और मन के इसी चंद्रमा के लक्षण के अनुसार चांचल्य की प्रचुरता अत्यधिक होती है। इससे यह निर्धारण किया जा सकता है कि मानव का और मन से जुड़े हुए सभी कोश हैं। वहीं भारतीय ज्ञान परम्परा में स्वप्न विश्लेषण एक

गहन और बहुआयामी विषय है, जिसे प्राचीन ग्रंथों, वेदों, उपनिषदों, पुराणों और आयुर्वेदिक शास्त्रों में विस्तार से वर्णित किया गया है। स्वप्नों का अध्ययन न केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से किया गया है, बल्कि इसे मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और ज्योतिषीय दृष्टियों से भी देखा गया है।

1. वेद और उपनिषदों में स्वप्न विश्लेषण -

ऋग्वेद और अथर्ववेद में स्वप्नों का उल्लेख मिलता है, जहाँ इन्हें चेतना के विभिन्न स्तरों के रूप में देखा गया है। बृहदारण्यक उपनिषद में स्वप्न अवस्था (स्वप्नावस्था) को जीवन के चार अवस्थाओं में से एक माना गया है - जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति और तुरीय। स्वप्नों को आत्मा और परमात्मा के संवाद का माध्यम भी कहा गया है।

2. योग और तंत्र परम्परा में स्वप्न -

योग दर्शन में स्वप्नों को चित्त की गहराई में दबे हुए संस्कारों और विचारों की अभिव्यक्ति माना जाता है। तंत्र शास्त्रों में स्वप्नों को आध्यात्मिक संदेशों और रहस्यमयी शक्तियों का संकेत माना गया है।

3. आयुर्वेद में स्वप्न विश्लेषण -

आयुर्वेदिक ग्रंथों जैसे चरक संहिता में स्वप्नों को मानसिक स्वास्थ्य और शरीर के दोषों (वात, पित्त, कफ) के असंतुलन से जोड़ा गया है। स्वप्नों के माध्यम से व्यक्ति के स्वास्थ्य और संभावित रोगों की पहचान करने की प्रक्रिया बताई गई है।

4. ज्योतिष और स्वप्न विज्ञान -

स्वप्न शास्त्र (स्वप्न विचार) भारतीय ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसमें स्वप्नों के आधार पर भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी की जाती है। स्वप्नों को शुभ और अशुभ श्रेणियों में बांटा गया है, और उनकी व्याख्या के लिए विशेष नियम दिए गए हैं।

5. भारतीय दर्शन में स्वप्न का महत्व -

अद्वैत वेदांत में स्वप्नों को माया (भ्रम) का हिस्सा माना गया है, जो जाग्रत और स्वप्न दोनों अवस्थाओं में एक समान रूप से प्रभाव डालती है। स्वप्नों का विश्लेषण आत्मज्ञान और आत्मसाक्षात्कार के साधन के रूप में भी किया गया है।

निष्कर्ष -

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्वप्नों का विश्लेषण केवल भौतिक अनुभवों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह आध्यात्मिक जागरूकता, मनोवैज्ञानिक संतुलन और भविष्यवाणी का एक गहरा माध्यम

है। यह दृष्टिकोण आधुनिक मनोविज्ञान और फ्रायड जैसे मनोवैज्ञानिकों के सिद्धांतों से कहीं अधिक व्यापक और समग्र है।

सन्दर्भ -

1. ऋग्वेद 10/90/13
2. यजुर्वेद 31/12
3. अथर्ववेद 19/6/0/7
4. स्वप्न विश्लेषण
5. सिग्मंड फ्राइड।

क्षयाधिमासः

चांदनी शर्मा*

सारांशः -

क्षयो मासः इति क्षयमासः। यस्मिन् चान्द्रमासे सूर्यस्य सङ्क्रान्तिद्वयं जायते स क्षयमासः भवति। **द्विसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।**[1] मासगणना तु चान्द्रमानेनैव सार्धमेव तत्र सूर्यसङ्क्रान्तिरपि आवश्यकी। यस्मिन् मासे क्षयमासः दृश्यते, ततः मासत्रयपूर्वं तथा च त्रिमासानन्तरम् एको अधिमासो भवति तदेवात्र स्पष्टरूपेण वर्ण्यते।

कुञ्जीशब्दाः - क्षयमासः, चान्द्रमासः, सङ्क्रान्तिः, **द्विसङ्क्रान्तिमासः,** मासगणना चान्द्रमानम्, सूर्यसङ्क्रान्तिः अधिमासः।

ज्योतिषशास्त्रे समयतिथिमासनक्षत्रादिनां भूमिका गूढतमा वर्तते। कालगणनायां सूर्यचन्द्रादिग्रहनक्षत्राणां च प्रभावः दरीदृश्यते । एतेषामेव दीप्तपिण्डानामाधारेण मासनिर्धारणं क्रियते । एतेष्वपि मासेषु केचन विशेषस्थितियुक्तमासाः **क्षयाधिमास** नाम्ना ज्ञायन्ते । विशेषखगोलीयस्थितौ क्षयाधिमासयोः आनयनं भवति। दर्शान्तादर्शान्तं यावत् चान्द्रमासस्य गणना क्रियते। यस्मिन् चान्द्रमासे सूर्यस्य संक्रान्तिर्नभवति स अधिमाससंज्ञको भवति। विपरीतस्थितौ यस्मिन् चान्द्रमासे सूर्यस्य संक्रान्तिद्वयं दृश्येते स क्षयमासनाम्ना ज्ञायते।

असङ्क्रान्तिमासोऽधिमासः स्फुटः स्यात्
द्विसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।
क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्यात्
तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयञ्च॥[2]

लोकव्यवहारे ज्योतिषशास्त्रे च सौरचान्द्रयोः व्यवहार: दृश्यते तथा तत्र संक्रान्तियुक्ता एव चान्द्रमासाः गृह्यन्ते। क्षयाधिमासयोः विषये कथ्यते यत् क्षयमासस्तु कदाचिदेव भवति परन्तु

---

*शोधच्छात्रा (ज्योतिषविभागः), श्रीलालबहादुरशास्त्रिराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नई दिल्ली।

[1] सि०शि०,ग. अ. श्लो. ६
[2] सि.शि. ग.अ. ,श्लो०-६

अधिमासः निश्चितकाले द्वात्रिंशन्मासानन्तरम् अवश्यं दृश्यते।

द्वात्रिंशद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा।
घटिकानां चतुष्टयेन पतति क्षयाधिमासकाः।।

- **अधिमासः -**

भवन्ति शशिनो मासाः सुर्येन्दुभगणान्तरं।
रविमासोनितास्ते तु शेषाः स्युरधिमासकाः।।[3]

"दर्शः सूर्येन्दुसङ्गमः" एति शब्दकल्पद्रुमाधारेण यदि पश्यामश्चेत् अधिको मासः अधिमासः। चैत्रवैशाखादिद्वादशमासान्विहाय अवशिष्टमासोऽयम् अधिमासनाम्ना ज्ञायते। अस्यैव अधिमासस्यापरो नाम मलमासः, मलम् अर्थात् विकारः द्वादशमासानतिरिच्य सौरचान्द्रमानयोः विकारवशात् उत्पद्यते अयं मासः, अतः मलमास इति संज्ञा दत्ता बुधैः।

मेषादिस्थे सवितरि यो-यो मासः प्रपूर्यते चान्द्रः।
चैत्राद्यः स विज्ञेयः पूर्तिर्द्वित्वेऽधिमासोऽन्यः॥[4]

विषयेऽस्मिन् मुहूर्तचिन्तामणिकारेण रामदैवज्ञेन कथितं यत् **"स्पष्टार्कसंक्रान्तिविहीन उक्तो मासोऽधिमास"** स्थूलरूपेण वदामश्चेत् चान्द्रमासे यस्मिन् सूर्यसंक्रान्तिर्नभवति एतादृशमासः अधिमासरुपेण स्वीक्रियते। अधिमासः कथमुत्पद्यते ज्योषिशास्त्रानुसारेण?

दर्शावधिश्चान्द्रमसो हि मासः सौरस्तुसङ्क्रान्त्यवधिर्यतोऽतः।
दर्शाग्रतः सङ्क्रमकालतः प्राक् सदैव तिष्ठत्यधिमासशेषम्॥[5]

अर्थात् दर्शावधिश्चान्द्रसमो हि मासः अर्थात् अमान्तादमान्तं यावत् चान्द्रमासः, चैत्रादयः सङ्क्रान्त्युक्ताः भवन्ति। अमान्ताद् सङ्क्रान्तिकालं यावत् कालो अधिशेष नाम्ना ज्ञायते। अधिशेषस्यैव वर्धितकालो एकचान्द्रमासतुल्यो यदा भवति तदा अधिमासः भवति।

सौरान्मासादैन्दवः स्याल्लघीयान्यस्मात्तस्मात्संख्यया तेऽधिकाः स्युः।
चान्द्राः कल्पे सौरचान्द्रान्तरे ये मासास्तज्ज्ञैः तेऽधिमासाः प्रदिष्टाः॥[6]

अनुपातं कृत्वा यदा सिद्धान्तज्योतिषाधारेण पश्यामश्चेत् -

रविमासः ३०/२६/१७ सावयवसावनैः सम्पद्यते।

[3] सू.सि, मध्यमाधिकार,श्लो – 35

[4] शाकल्यसंहिता

[5] सि.शि. गोलाध्याये, म.ग., श्लो०-१६

[6] सि०शि०, गो.म.ग. , श्लो. ११

तथैव चान्द्रमासः २६/२१/५० सावयवसावनैः सम्पद्यते।

रविचान्द्रमासयोरन्तरम् = ३०/२६/१७ - २६/२१/५० = ०/५४/२७ भूदिनात्मको कालो अवशिष्यते।

तत्र $\frac{०/५४/२७ \times ३०/२६/१७}{२६/२१/५०}$ = ३२/१५/३१

३२/१५/३१ सौरमासैः एकोऽधिमासः उत्पद्यते इति।

- **क्षयमासः -**

क्षयो मासः इति क्षयमासः। यस्मिन् चान्द्रमासे सूर्यस्य सङ्क्रान्तिद्वयं जायते स क्षयमासः भवति। **द्विसङ्क्रान्तिमासः क्षयाख्यः कदाचित्।**[7] मासगणना तु चान्द्रमानेनैव सार्धमेव तत्र सूर्यसङ्क्रान्तिरपि आवश्यकी। यस्मिन् मासे क्षयमासः दृश्यते, ततः मासत्रयपूर्वं तथा च त्रिमासानन्तरम् एको अधिमासो भवति। भास्कराचार्यः वर्णयति यत् क्षयमासः कार्तिकादित्रये अर्थात् मार्गशीर्षादिमासत्रये एव समुपलभ्यते -

"क्षयः कार्तिकादित्रये नान्यतः स्युः तदा वर्षमध्येऽधिमासद्वयञ्च।"[8]

ग्रहस्य स्वोच्चस्थाने गतिरल्पा एवञ्च नीचस्थाने गतिरधिका भवति तस्यैव ग्रहस्य, स्पष्टमिदं यद् यदा ग्रहस्याल्पो गतिः तदा मासस्य पूर्तिः अधिककालेन जायते विपरीतं यदा ग्रहस्यगतिरधिका भवति तदा अल्पकालेन मासस्य पूर्तिः ग्रहो करोति। मिथुनराशिगतसूर्यस्य नीचराशिः धनुर्भवति, तत्र स्थितो दिवाकरः अल्पकालेन अधिकगत्यवशात् मासस्य पूर्तिः करोति तदा एकचान्द्रमासे द्विसंक्रान्तिमासवशात् क्षयमासः भवति इति।

⇓ ⇓ ⇓ ⇓

प्र.अमा. प्र.सं. द्वि.स. द्वि. अमा.

प्र. अमा =	प्रथम अमान्तः,	प्र. सं.	= प्रथमा संक्रान्तिः
द्वि. सं. =	द्वितीया सङ्क्रान्तिः,	द्वि. अमा.	= द्वितीय अमान्तः

यथा आह आचार्यभास्करः -

गतोऽब्ध्यद्रिनन्दै ६७४ र्मिते शाककाले
तिथीशै११५ र्भवत्यथाङ्गाक्षसूर्यैः१२५६।

[7] सि०शि०,ग. अ. श्लो. ६

[8]

गजाद्रयग्निभूमि १७८ स्तथा प्रायशोऽयं
कुवेदेन्दु १४१ वर्षैः क्वचिद्गोकुभिश्च ॥[9]

अधिमासस्यैवापरसंज्ञाः मलमासपुरूषोत्तममासादयश्च। धार्मिकदृष्ट्या मासस्यास्य महत्ता वर्तते। मासेऽस्मिन् व्रतोपवासयज्ञवापीकूपतड़ागप्रतिष्ठादि कार्याणि न करणीयानि इति शास्त्राज्ञा।

माङ्गल्यमभिषेकञ्च मलमासे विवर्जयेत्
त्यजेद्यानं महादानं व्रतं देवविलोकनम्।
वापीकूपतडागादिप्रतिष्ठां यज्ञकर्म च।[10]

क्षयमासेऽपि शुभकार्याणि न करणीयानि इति ज्योतिर्विद्भिः उक्तमस्ति। कस्यापि कार्यस्य शुभफलं न प्राप्यते यदा तत् कार्यं क्षयाधिमासयोः क्रियते।

वाप्यारामतड़ागकूपभवनारम्भप्रतिष्ठेव्रतारम्भोत्सर्ग।
वृद्धस्त्वास्तशिशुत्व इज्यसितयोः न्यूनाधिमासे तथा॥

[9] सि. शि.
[10] सि.तत्त्व.वि. प्रबन्ध

बहुमाध्यमाधारितं संस्कृतशिक्षणम्

डा. रमणमिश्रः*

शोधसारांशः

संस्कृतशिक्षणं नाम भारतीयताः शिक्षणमिति। न केवलमिदम् एकस्याः भाषायाः शिक्षणम्, अपि एतत् समग्रजीवनशैलीनां शिक्षणम्। जीवनस्य व्यवस्थितस्य आचारस्य विचारस्य च शिक्षणमिदम्। तस्मादेव भारतीयसंस्कृतेः पुनः प्रतिष्ठापनाय (Rehabilitation) संस्कृतेः आधार-भूतायाः संस्कृतभाषायाः स्थानं कल्पितमवलोक्यते। माध्यमः इत्युक्ते सम्प्रेषणस्य साधनम्। अस्य तात्पर्यम् एकाधिकानां माध्यमानाम् एकीकरणमेव । सम्प्रत्यय स्पष्टीकरणाय परिभाषाविचारः सदापेक्ष्यते। विभिन्नविदुषां मतेषु बहुमाध्यमः नाम किम् इत्यत्र विचारः प्रधानः। विभिन्नविषयवस्तुप्रस्तुतीकरणेभ्यः रूथक्लर्कप्रतिपादिताः प्रौद्योगिक्यः, पुनश्च आगामितालिका बहुमाध्यमस्य कालक्रमिकविकासः सम्यक्तया प्रस्तुतः।

कुञ्जीशब्दाः - शिक्षणम्, संस्कृतशिक्षणम्, भारतीयता, भाषाशिक्षणम्, माध्यमः, सम्प्रेषणम्, एकीकरणम्, विचारः, रूथक्लर्क, प्रौद्योगिकी।

संस्कृतशिक्षणम् -

संस्कृतशिक्षणं नाम भारतीयताः शिक्षणमिति। न केवलमिदम् एकस्याः भाषायाः शिक्षणम्, अपि एतत् समग्रजीवनशैलीनां शिक्षणम्। जीवनस्य व्यवस्थितस्य आचारस्य विचारस्य च शिक्षणमिदम्। प्रो. रविशङ्करमेनोन् सम्यक्तयोद्घोषयति यत् संस्कृत- शिक्षणं भाषाशिक्षणपर्यन्तं परिमितं नास्ति। संस्कृतशिक्षणेन सह भारतीयसंस्कृतेः मूलतत्त्वानां परिचयप्रापणेन तस्याः संरक्षणोपायानां प्रशिक्षणं प्रान्तीयभाषाणां पोषणं च भवति। अतः संस्कृतशिक्षणे क्षेत्रे विद्यमानाः समस्याः न केवलं प्राचीनभाषाशिक्षणस्य तदवबोधनस्य वा समस्याः, परं समस्तशिक्षाव्यवस्थायाः समस्याः भवन्ति। तस्मादेव भारतीयसंस्कृतेः पुनः प्रतिष्ठापनाय (*Rehabilitation*) संस्कृते

*सहायकचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः, केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः, भोपालपरिसरः, भोपालम्

भूताया: संस्कृतभाषाया: स्थानं कल्पितमवलोक्यते ।[1]

- **बहुमाध्यम:** [*Multimedia*] -

माध्यम: इत्युक्ते सम्प्रेषणस्य साधनम्। अस्य तात्पर्यम् एकाधिकानां माध्यमानाम् एकीकरणमेव।[2] **हूगवीन:** (1997) परिभाषयति यदेकस्या: व्यवस्थाया: गुणानां भाव:, य: माध्यमानां बहुविमात्मकं प्रत्यक्षीकरणं प्रति सूचयति, यत्र सम्भाषणं सङ्गीतं, पाठ्यं, चित्रात्मकवस्तु, दृश्य-चलचित्राणि तत्त्वानि समाहितानि भवन्ति।[3] **रूजिरो** (2000) महोदयस्य मतानुसारेण बहुमाध्यमप्रविधि: सम्प्रति सङ्गणकप्रविधे: उपयोगं करोति, यत्र पाठ्यस्य चित्राणाम् आरेखाणां दृश्यानां ध्वनेश्च समाहारो भवति ।[4]

- **बहुमाध्यमपुञ्जस्य परिभाषा -**

सम्प्रत्यय स्पष्टीकरणाय परिभाषाविचार: सदापेक्ष्यते। विभिन्नविदुषां मतेषु बहुमाध्यम: नाम किम् इत्यत्र विचारः प्रधानः। यथाग्रे काश्चित् परिभाषा: प्रस्तुता: वर्तन्ते, यासां समालोकनेन बहुमाध्यमसम्प्रत्यय: विशदो जायते। कथा-घटना-सूचनाभि: सम्बद्धम्, अन्तःक्रियाधारितम् एकाधिकमाध्यमानामेकीकरणम् इति ।[5]

- **वेरोन-ओविग**महोदयानामनुसारेण सङ्गणकाधारितप्रौद्योगिकी यत् बहुमाध्यम: इति यत्र क्वचित् समस्तानां, क्वचित् पाठ्य-चित्र-आरेख-चित्रावली-चलचित्र-ध्वन्यादितत्त्वानां समावेशो भवति ।[6]
- **रीबेर** (1994) परिभाषयति यत् बहुमाध्यमानुदेशनमेकीकृतानुदेशना-त्मकव्यवस्था वर्तते, या सङ्गणकाधारितप्रौद्योगिकीनां माध्यमेन दृश्यशाब्दिकोद्दीपनानि प्रस्तौति ।[7] आगामिचित्रे बहुमाध्यमे निहितसंप्रत्यया: संघटकाना: प्रदर्श्यन्ते-

[1] डॉ. वि. मुरलीधर शर्मा, (2003), संस्कृतशिक्षणसमस्याः, पृ. 11.

[2] Amy Zerba.(2004).Redefining Multimedia toward a More Packaged Journalism Online. p. 2.

[3] Hoogeveen, M. (1997). Toward a Theory of the Effectiveness of Multimedia Systems. International Journal of Human-Computer Interaction, 9 (2). pp. 151-168.

[4] Ruggiero, T. E. (2000). Uses and gratifications theory in the 21st century. Mass Communication and Society, 3(1). pp. 3-37.

[5] Amy Zerba. (2004). p. 4.

[6] Barron & Orwig. (1995). Multimedia Technolgies for Training Libraries. Unlimited Inc. Engelwood. CO.

[7] Rieber, L. (1994). Computers, Graphics and Learning. Madison, WI, Brown and Benchmark, p. 251.

आरेखः - 1

बहुमाध्यमे निहितसंप्रत्ययानां, संघटकानाञ्च प्रदर्शनम्

वस्तुतः बहुमाध्यमः विभिन्नमाध्यमानां समुच्चय एव। प्रधानतया अत्र चतुर्विधानां माध्यमानां समाहारः क्रियते-

- **प्रथमं** प्रक्षेपितमाध्यमाः (पाठ्यं रेखाचित्राणि, चलचित्राणि)
- **द्वितीयं** दृश्यमाध्यमाः (प्रतिमानं, सारणी, रेखाचित्रम्, श्याम-श्वेत फलकम्)
- **तृतीयं** मुद्रितमाध्यमाः (पुस्तकानि, सन्दर्भग्रन्थाः, कार्यपत्राणि)
- **चतुर्थं** मौखिकमाध्यमाः (व्याख्यानं, प्रश्नोत्तराणि, समूहचर्चा) ।[8]

अग्रिमतालिकायां विभिन्नविषयवस्तुप्रस्तुतीकरणेभ्यः **रूथक्लर्क**प्रति-पादितानां प्रौद्योगिकीनां संक्षिप्तचर्चा क्रियते -

तालिका- I

विभिन्नविषयवस्तुप्रस्तुतीकरणेभ्यः रूथक्लर्कप्रतिपादिताः प्रौद्योगिक्यः

क्र.	विषयवस्तुप्रकारः	रेखाचित्रीयसहायता	उदाहरणम्
1.	तथ्यम् (*Fact*)	विशिष्टरूपाणां, चित्रपटानाम्, उपकरणानां यथार्थवादिचित्रणम्	मृदुतन्त्रचित्रपटस्य चित्रणम्
2.	अवधारणा (*Concept*)	अवधारणायाः बहुविकल्पीयोदाहरणस्य यथार्थवादिचित्रणम्	प्रभावशालि वेबपटलानामुपयोगः

[8] उपर्युक्तम्, पृ. 43.

3.	प्रक्रिया (*Process*)	प्रक्रियाया: चरणानां चलचित्रणम्	सङ्गणकीयान्तर्जाले अभिक्रिया:
4.	क्रियाविधि: (*Procedure*)	चलचित्रणप्रदर्शनम्	मृदुतन्त्रोपयोगस्य चलचित्रम्
5.	सिद्धान्त: (*Principle*)	दूरवर्तिकार्यसम्बद्धं दृश्यावलीप्रदर्शनम्	प्रभावशालिप्रविधीनां दृश्यावली

पुनश्च आगामितालिका बहुमाध्यमस्य कालक्रमिकविकासं सम्यक्तया प्रस्तौति-

तालिका-II

बहुमाध्यमस्य कालक्रमिकविकास:

कालः	**विवरणम्**
1440	जर्मन जोहानस गटनवर्गद्वारा मुद्रणयन्त्रस्य आविष्कार: ।
1566	इटलीमध्ये समाचारपत्रस्य प्रकाशनम्, यत् केनापि 'गजेटा' (*Gazetta*) इति विशिष्टनाणकं दत्त्वा पठितुं शक्यते । अत: समाचारपत्रं 'गजेट' इति शब्देनापि संबुध्यते स्म ।
1822	चार्ल्स बेवेजद्वारा विशिष्टयन्त्रस्य निर्माणम्, यस्य उपयोग: ज्योतिषशास्त्रीय-गणितीयगणनायै कृत: ।
1830	चलचित्रस्य प्रगति: ।
1837	यान्त्रिकसङ्कस्य पूर्वसङ्कल्पनारूपेण चार्ल्स बेवेजद्वारा नूतनयन्त्रस्य निर्माणम् ।
1879	थॉमस एडीसनद्वारा चित्रयन्त्रस्य आविष्कार: ।
1887	जर्मनभौतिकशास्त्री हेनरिक हर्ट्जमहोदय: दूरवाणीतरङ्गान् आविष्कृतवान् ।
1890	हेनरिक हर्ट्जद्वारा तालिकीकरणयन्त्रस्य आविष्कार: । यस्य उपयोग: एकक-अभिलेखोपकरणरूपे कृत: आसीत् ।
1895	मारकोनी द्वारातारहितदूरवाणीसम्प्रसार: आविष्कृत: ।
1928	फ्रिट्ज फ्लेमरद्वारा चुम्बकीयपट्टिकाया: आविष्कार: कृत: ।
1928	वॉल्ट डिजनीद्वारा गतिचित्रस्य (*Animation*) निर्देशनम् ।
1937	एतनासोफ-बेरीसङ्गणकस्य (*ABC*) विनिर्माणम् । अनेन रेखीय-समीकरणस्य व्यवस्थाया: समाधानं प्राप्तम् ।
1952	आई.बी.एम. द्वारा प्रथमसङ्गणकस्य निर्माणम् अभवत् ।
1960	टेड नीलसनेन हाइपरटेक्ट प्रौद्यागिकी अन्वेषिता ।

1972	'पोङ्ग' इति प्रथम दृश्यक्रीडा (*Video Game*) निर्मिता।
1975	मोनीद्वारा वी.सी.आर. इत्यस्य निर्माणम्।
1976	एम.आई.टी. संस्थानेन 'मल्टीपलमीडिया' (*Multiple Media*) इति प्रायोजनाया: प्रस्ताव: प्रदत्त:।
1989	टिम बर्नर्स ली द्वारा 'वर्ल्ड वाइड बेव' (*World Wide Web*) इत्यस्य आविष्कम्।
1991	पी.डी.ए. कार्यक्रमासाम् क्रियान्वयनं यै: बहुमाध्यमेषु सङ्गणकस्य उपयोग: संजात:। (*1./2HU*) (*2. K-Nion*)
2004	सामाजिक सम्बन्धेभ्य: 'फेसबुक्' इत्यस्य निर्माणं, लोकसमर्पणम्।
2005	'यू-ट्यूब' इति दृश्य सामग्रीणाम् अन्तर्जालीयं लोकाय निर्मितम्।
	लुइस ग्लेस-विलियम एस. अर्नाल्डमहोदयाभ्यां प्रगतचित्रसंसाधकयन्त्रस्य अन्वेषणम्।

- **बहुमाध्यमानां माहात्म्यम् -**

बहुमाध्यम: बहूद्देश्यीय: भवति। महात्म्यबोधनाय प्रकृतस्याभावः पर्याप्त:। बहुमाध्यमोपागम: न स्यात् तर्हि प्राथमिकस्तरे विशेषत: कीदृश: नकात्मकप्रभाव: अनुभूयते। अनेन बहुमाध्यमोपागमस्य माहात्म्यं स्पष्टीभवति। सम्प्रति प्रभाविपर्या-वरणनिर्माणाय बहुमाध्यम: प्रासङ्गिक: इत्युच्यते। अस्य कतिपयोद्देश्यानि बहुमाध्यम-माहात्म्यं प्रदर्शयन्ति, तानि एताति सन्ति[9]-

- आधारभूतकौशलानां प्रवीणतायै अभ्यासकार्यावसर:।
- समस्यासमाधान क्षमताविकास:।
- अवधारणानां मूर्तामूर्तपक्षाणाञ्चावगमनम्।
- इन्द्रियजन्यसूचनानां परिचालनम्।
- प्राप्तज्ञानस्य दृढ़ीकरणम्।
- अधिगमस्य वैयक्तिक:, सहभागी चावसर:।
- कक्षाकक्षीयगतिविधीनां नियन्त्रणम्।

ट्रोलिप-अलेसीद्वारा (1988) प्रतिपादितं यत् कक्षाकक्षीयानुदेशने सङ्गणक-संयोजनेन यदुद्देश्यं प्राप्यं यत् विद्यार्थिनः अधिगमस्य सुगमीकरणं स्यात् यत् तैन ज्ञातं, तस्य मात्रागुणवत्तयो:

[9] Singh, L. N. & Biswal, A. (2013). Development and Implementation of Multimedia Packege to Teach Geography at Standard IX CBSE Students, p. 24.

संवर्धनमप्यावश्यकम्।[10] **सत्यप्रकाश-सुधांश**महोदययोः शब्देषु अस्माकं शिक्षणाधिगमपरिस्थितौ शब्दाडम्बरः एका विशिष्टसमस्येति। बहुमाध्यमेन एतस्याः न्यूनीकरणं भवितुं शक्यते। इतोऽपि एतयोः माहात्म्यविषये एते बिन्दवः द्रष्टव्याः[11]-

- सुदृढ़ानुभवः प्राप्यते।
- अधवारणाः सटीकतया पाठ्यन्ते, विशेषतः कदाचित् मात्रभाषणेन एतच्छक्यं न भवति।
- अधिगन्तारः अभिप्रेर्यन्ते, तेषामवधानञ्च केन्द्रीक्रियते।
- समय-स्थानयोः बाधाः दूरीक्रियन्ते, यथा कस्याचित् परिस्थितेः दृश्याभिलेखनं प्रस्तुत्यं भवति।
- मानवीयमनसः विचारस्य वा दूरूहावधारणाः, सम्प्रत्ययाः वा चित्रावलीमाध्यमेन प्रक्षेपणीयाः भवन्ति।
- शिक्षणोपकरणनिर्माण माध्यमेन प्रायोजनारूपेण विद्यार्थिनां सहभागिताः सुनिश्चितीकरणम्।
- पाठशिक्षणस्य प्रत्येकं चरणे यथा पाठपरिचये, प्रस्तुतीकरणे, मूल्याङ्कने वा बहुमाध्यमस्योपयोगः भवितुमर्हति।
- दीर्घकालवर्तिस्मृतिविकासाय बहुमाध्यमानां प्रयोगः।
- शिक्षक-शिक्षार्थिनां समय-श्रमादीनाम् अल्पव्ययः।
- समस्यासमाधानकौशलानां प्रशिक्षणेन उच्चयोग्यतानां विकासः।

शिक्षायोगः (1964-66) उद्घोषयति यत् शिक्षायाः नूतनगत्यात्मकविधीनाम् अन्वेषणमावश्यकं वर्तते, ये रटनस्मरणप्रवृत्तीनां स्थाने वैयक्तिकावधानाय अधिगमाय च उपयुक्तविधयः स्युरिति।[12] जिज्ञासायाः उद्भावनाय स्वाधिगमस्य विशिष्टकौशल-विकासाय एतैः विधिभिः ध्यानं दातव्यमिति। प्रो. मधुगुप्तामहोदयानुसारेण (2003) बहुमाध्यमोपयोगेन एका अवधारणा एको विचारो वा अधिकः स्पष्टो भवति, इन्द्रियेभ्योऽधिको ग्राह्यो भवति, अधिगमश्च

---

10 Trollip, S.R. & Alessi, S. M. (1988). Incorporating Computers Effectively into Classrooms. Journal of Research on Computing in Education.

11 International Journal of Education and Psychological Research. Volume, March 2014, p. 42.

12 Annakodi, R. (2013). Effectiveness of Multimedia and Co-Operative Learning Strategies at Secondary Level, p. 1.

अधिक: स्थायी भवति ।[13] मदनमहोदयेनापि बहुमाध्यमाशिक्षणकार्यक्रम: विद्यार्थिन्यमुपलब्धिवृद्धये उपयोगीति प्रतिपादित:। प्राय: अनुसन्धातार: पावरपाइन्ट-प्रस्तुतीकरणस्य सङ्गकसहायका-नुदेशनस्य चादीनां सन्दर्भे क्रियमाणानुसन्धानै: कुर्वन्ति, निष्कर्षान् प्रतिपादयन्ति यत् बहुमाध्यमोपागम: परम्परागतोपागमात् प्राय: अधिकः उपयोगीति ।[14]

मङ्गल-मङ्गलमहोदयानुसारेण बहु-इन्द्रियानुदेशनस्य बहुमाध्यमस्यो-पयोगिता आत्यन्तिकरूपेण सिद्धा वर्तते, यतोऽपि अस्मिन् सन्दर्भे संज्ञानात्मक-व्यवहारात्मक-संरचानात्मकादिमतान्यनुसृत्य अनेकविधान्यध्ययनानि अनुसन्धानानि चोपयोगितां स्पष्टीकुर्वन्ति । केचित् बिन्दव: अत्र द्रष्टव्या: -

- शिक्षणप्रक्रियाया: रूचिपूर्णसोद्देश्यप्रभाविनिर्माणम्
- अधिगन्तृणाम् आवश्यकतानां प्राप्ति:
- अधिगमस्य उच्चस्तरीयं वैयक्तीकरणं स्वतन्त्रीकरणञ्च
- नित्यचर्यात: अध्यापकानां मुक्ति:
- जनसामान्यान् प्रति शिक्षाया: समुचिताकांक्षा, समुचितविस्तारश्च
- व्यक्तिगताधिगमस्य समूहाधिगमस्य च लाभानां समुपलब्धि: ।

सन्दर्भग्रन्थाः -

1. कुलश्रेष्ठ, एस. पी. एवं सिंघल, अनुपमा. (2013). *शैक्षिक तकनीकी के मूल आधार*. आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
2. शर्मा, शंकर दयाल. (2005). *शिक्षा के आयाम*. नई दिल्ली. प्रभात प्रकाशन.
3. Adelsberger, H. H.; Collis, B. & Pawlowski, J. M. (Eds.). (2002). Handbook on Information Technologies for Education and Training. Berlin: Springer.
4. Anderson, Neil. (2009). Equity and Information Communication Technology (ICT) in Education. New York: Peter Lang Publishing, Inc.
5. Baron, Ann E. and others (2006). Technologies for Education: A Practical Guide (5th Edi.). Westport: Library Limited.
6. Barron, A. E., & Orwig, G.W. (1995). Multimedia Technologies for Training Libraries. Unlimited Inc, Englewood, CO.

[13] Gupta, Madhu & Chirag. (2013). Opionion of Subject Experts for Effectiveness of Multimedia Teaching Package in Mathematics for Fifth Graders: An Analysis, p. 117.

[14] Madan, M (2009). "Effectiveness of Multimedia Teaching Programme for Teaching of English. Ph.D. Education, Maharshi Dayanand University, Rohtak.

छात्राणां बौद्धिकविकासे तन्त्रयुक्तीनां प्रभावः

सस्मिता खण्डुआल*
डॉ. एस.एल. सीताराम शर्मा**

सारांशः -

विविधेषु जीवेषु मानवो बुद्धिकारणादेव श्रेष्ठो मन्यते । बुद्धिरेव मानवं पशुभ्यः पृथक्करोति। मानवस्य अनन्यायाः एतास्याः योग्यतायाः विषये परिज्ञानस्य प्रयासाः आदिकालात् प्रचलिताः वर्तन्ते । विश्ववाङ्मयेषु पुरातने भारतीयवाङ्मयेऽपि बुद्धिसन्दर्भे प्रभूतो विचारः प्रस्तुतो वतते। भारतीयदर्शने बुद्धिः प्रकृतेर्विकासस्य प्रथमं चरणं महत्तत्त्वरूपेण निरूपिता वर्तते । महत्तत्त्वे बुद्धिरहङ्कारमनस्तत्त्वानि निहितानि सन्ति । महत्तत्त्वमेव मनोविकासरूपा बुद्धिरिति कथ्यते। बुद्धौ स्मृतिसंस्कारौ विद्येते। बुद्धिरन्तःकरणस्याङ्गरूपेणापि मन्यते। एषा सङ्कल्पविकल्पात्मिकशक्तिरूपेणापि वर्णिता वर्तते । इयमेव निश्चयात्मिकाशक्तिरपि कथिता वर्तते। व्यवहाराध्ययनसन्दर्भे बुद्धिः अनन्ययोग्यतारूपेण मन्यते । एषा वैयक्तिकभिन्नतायाः कारणभूता वर्तते । मनोवैज्ञानिकाः बुद्धेर्व्याख्याप्रयासे एतस्याः सम्बन्धं शिक्षणेन, अधिगमेन व्यक्तित्वेन च स्वीकुर्वन्ति । व्यक्तेः भौतिकं, सामाजिकं, सांस्कृतिकञ्च परिवेशं तस्य बुद्धिं पोषयति। एवं स्वकीयस्य विकासस्य विविधासु शैशवबाल्याद्यवस्थासु जनाः अधिगमस्य कौशलस्य चार्जनं कुर्वन्ति।

कुञ्जीशब्दाः - बुद्धिः, विश्ववाङ्मयम्, पुरातनभारतीयवाङ्मयम्, भारतीयदर्शनम्, महत्तत्त्वम्, बुद्धिरहङ्कारमनस्तत्त्वानि, मनोविकासः, स्मृतिसंस्कारौ, अन्तःकरणस् निश्चयात्मिकाशक्तिः, सात्त्विकी, राजसी, तामसी, आदिशङ्कराचार्यपादाः, विवेकः।

प्रस्तावना -

विविधेषु जीवेषु मानवो बुद्धिकारणादेव श्रेष्ठो मन्यते। बुद्धिरेव मानवं पशुभ्यः पृथक्करोति। मानवस्य अनन्यायाः एतास्याः योग्यतायाः विषये परिज्ञानस्य प्रयासाः आदिकालात् प्रचलिताः वर्तन्ते। विश्ववाङ्मयेषु पुरातने भारतीयवाङ्मयेऽपि बुद्धिसन्दर्भे प्रभूतो विचारः प्रस्तुतो वतते। भारतीयदर्शने बुद्धिः प्रकृतेर्विकासस्य प्रथमं चरणं महत्तत्त्वरूपेण निरूपिता वर्तते। महत्तत्त्वे बुद्धिरहङ्कारमनस्तत्त्वानि निहितानि सन्ति । महत्तत्त्वमेव मनोविकासरूपा बुद्धिरिति

* शोधच्छात्रा, शिक्षाशास्त्रविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः।
** सहायकाचार्यः, शिक्षाशास्त्रविभागः, राष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, तिरुपतिः।

कथ्यते। बुद्धौ स्मृतिसंस्कारौ विद्येते। बुद्धिरन्तःकरणस्याङ्गरूपेणापि मन्यते। एषा सङ्कल्पविकल्पात्मिकशक्तिरूपेणापि वर्णिता वर्तते । इयमेव निश्चयात्मिकाशक्तिरपि कथिता वर्तते। बुद्धिः शास्त्रेषु त्रिधा विभज्यते सात्त्विकी, राजसी, तामसी चेति। आदिशङ्कराचार्यपादास्तु ज्ञानं बुद्धेर्वृत्तिः इति मन्वन्ते, अत एव ते बुद्धिं **वृत्तिमतिरिति** प्रतिपादितवन्तः । शास्त्रेषु बुद्धिर्विवेकरूपापि कथिता वर्तते।

बुद्धेः प्रकृतिः

साम्प्रतिके युगे बुद्धिर्ज्ञानरूपा मन्यते। एषाऽनुमानिता (Inferred) ज्ञानशक्तिरूपेणापि स्वीक्रियते । यतो ह्येतस्याः ज्ञानं प्रत्यक्षरूपेण नैव भवति, प्रत्युत क्रियाभिः व्यवहारैश्च जायते । यदा कश्चन बालकः स्वकीयं पाठ्यविषयमन्येभ्यः शीघ्रमवगच्छति, तर्हि स 'बुद्धिमान्' इति कथ्यते। यश्च समस्यायाः शीघ्रं समाधानं प्रस्तोतुं शक्नोति, 'सोऽपि मेधावीति' मन्यते। एवं दैनिकैः निरीक्षणैः बुद्धिः एतादृशी मानसिकक्षमतारूपेण मन्यते यस्याः अभिव्यक्तिः जीवनस्य विविधेषु सन्दर्भेषु भवति । मनोविज्ञानशास्त्रे कृतभूरिपरिश्रमेण राइलमहोदयेन प्रतिपादितं यत् बुद्ध्या कस्यचिद्गुणस्य बोधो न भवति, प्रत्युत एतया प्रवृत्तेः सूचना एवं प्राप्यते।

बुद्धेर्भेदं धृतश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनञ्जय।।

(श्रीमद्भगवद्गीता - १८.२९)

तत्र ज्ञानं बुद्धेर्वृत्तिः बुद्धिस्तु वृत्तिमती

(शाङ्करभाष्यम्)

इदानीं व्यवहाराध्ययनसन्दर्भे बुद्धिः अनन्ययोग्यतारूपेण मन्यते। एषा वैयक्तिकभिन्नतायाः कारणभूता वर्तते । मनोवैज्ञानिकाः बुद्धेर्व्याख्याप्रयासे एतस्याः सम्बन्धं शिक्षणेन, अधिगमेन व्यक्तित्वेन च स्वीकुर्वन्ति । व्यक्तेः भौतिकं, सामाजिकं, सांस्कृतिकञ्च परिवेशं तस्य बुद्धिं पोषयति। एवं स्वकीयस्य विकासस्य विविधासु शैशवबाल्याद्यवस्थासु जनाः अधिगमस्य कौशलस्य चार्जनं कुर्वन्ति।

बुद्धेः परिभाषाः

बुद्धिर्हि मानवस्यामूर्त्ता योग्यता वर्तते । यद्यपि बुद्धेः इतमित्थतया परिभाषीकरणं दुष्करं वर्तते, तथापि वैज्ञानिकाः एतस्याः विविधाः परिभाषाः प्रस्तुतवन्तः। केचन तु एकाथिकपरिभाषाः अपि कृतवन्तः, यासां परस्परं समन्वयोऽपि नास्ति। परिभाषाणां वर्गीकरणां चतुर्षु वर्गेषु प्रचलितो वर्तते।

- नवसु परिस्थितीषु आत्म संयोजन एव वुद्धिः । Intelligence is the ability to adjust oneself to a new situation.
- परिवर्द्धितजटिलवातावरणे जीवस्य आत्मसमञ्जनयोग्यतैव मानसिकयोग्यता।

- बरिंगहम्महोदयानुसारम् - "अधिगमक्षमतैव मानसिकयोग्यत"। Mental ability is the ability to learn.
- स्टेर्नमहोदयानुसारं मानसिकयोग्यता नाम नूतनासु दशासु स्वचिन्तनक्षमता सुव्यवस्थीकरणस्य योग्यता।
- Mental ability is the general capacity of an individual to consciously adjust thinking to new situation.
- निर्दिष्टा व्यक्तिगता अभीष्टकार्यसिद्ध्यर्थम् अपेक्षिता सामञ्जस्य सम्पादनात्मिका शक्तिः, सामञ्जस्यशक्तिश्चेति त्रयः अंशाः बुद्धिप्रक्रियायां सन्तीति Sinet महाशयः अभिप्रैति।
- क्लिष्टतमपरिवेशस्य स्वानुकूलीकरणसामञ्जस्यसम्पादनात्मिका शक्तिरेव बुद्धिरिति Spencer महाशयेनोक्तम्।
- अमूर्त्तचिन्तनमेव बुद्धिरिति Terman महोदयेनोक्तं लक्षणमस्ति।
- बुद्धिः नाम न केवलम् सामान्यचिन्तनसामर्थ्यम् अपितु बुद्धिः त्रिप्रकारिका भवतीति थारण्डैक महाशयस्य आशयः तद्यथा - अमूर्त्तबुद्धिः, यान्त्रिकबुद्धिः, सामाजिकबुद्धिः चेति।
- बुद्धिर्नाम समस्यावगमनसामर्थ्यं भवति याः समस्याः निम्नसूचितलक्षणान्विताः भवन्तीति Stoddard महाशयोनोक्तम्। तद्यथा - काठिन्यता, जटिलता, अमूर्त्तता, मितव्ययिता, लक्ष्यं प्रति समञ्जनबुद्धिः सामाजिकमूल्यं, निजसामर्थ्यस्य प्रोत्साहनम् इति।
- प्रायः सर्वाङ्गिकारयोग्यं Wechslers महाशयेनोक्तं बुद्धिलक्षणम् एवमस्ति - "व्यक्तौ विद्यमानसमग्रसामर्थ्यं बुद्धिर्भवति। बुद्ध्या सोद्देश्यं व्यवहरति, तार्किकक्रमेण आलोचयति, परिसरान् स्वानुकूलीकर्त्तुं च शक्नोति इति।

इतीमाभिः परिभाषाभिः इदं स्पष्टं वक्तुं शक्यते यत् - मानसिकयोग्यता जन्मजातक्रमेण विकसति - परिवर्द्धिता च काचन क्षमता। व्यवहारे वर्त्तमानसमस्यायां सन्निर्णयक्षमता, सदवबोधनम्, उपयुक्तकर्तव्यस्य प्रस्तुतीकरणम्, व्यवहारपटुत्वम्, समायोजनस्य क्षमता चान्तर्भवन्ति।

1. **योगः -** दुरास्थानमपि पदानां एकीकरणम् एव योगः भिन्नशब्दानां संयोजनं योगः एव प्रथमवाक्ये उक्तस्य शब्दस्य द्वितीयवाक्यस्य च सहसंबन्धं स्थाप्यते। अनेन छात्राणां शब्दसंयोजनक्षमता अभिवर्धते।
2. **उद्देश्यः -** संक्षेपेण उक्तविषयः उद्देश्यनाम संक्षेपाभिधानम्। पाठनसमये विषयस्य उद्देश्यकथनेन सम्पूर्णपाठस्य मुख्यबिन्दुः एकेन वाक्येन उपस्थाप्यते।
3. **निर्देशः -** विस्तरवचनं निर्देशः। अत्र एकस्य शब्दस्य विभिन्नोदाहरेणैः प्रत्युदाहरणैः विस्तार- वचनैः छात्राणां विषये दृढीकरणम्।

4. **प्रसङ्गः -** प्रसङ्गो नाम पूर्वाभिहितस्थार्थस्य प्रकरणत्वादिना पुनरभिधानं यथा - एकेन विषयपाठनसमये सम्बद्धान् अन्यान् विषयान् तस्मिन् समये कथनेन छात्राणां विषयावबोधः कौतूहलञ्च आयाति । द्वितीयप्रकरणात् अथवा यदा प्रथमोक्तः विषयः प्रकरणे आगच्छति तदा विषयस्य पुनः कथनं सन्दर्भः इति कथ्यते।
5. **हेतुः -** यदन्यदुक्तमन्यार्थसाधकं भवति स हेत्वर्थः यथा – यत्र यत्र धूमः दृश्यते तत्र तत्र वह्नेः बोधः जायते । अत्र अग्निः धूमस्य हेतुः भवति । अन्यत्र उच्यमानः अन्यविषयः हेत्वर्थः।
6. **अपदेशः -** कार्यकारणकथनं अपदेशः उच्यते । मधुररसस्य सेवेनेन कफः वर्धते । यतः उभयोः गुणाः समानाः सन्ति। अपदेशो नाम यत्प्रतिज्ञातार्थसाधनाय हेतुवचनम्।

निष्कर्षः -

एतेषां तन्त्रयुक्तीनां प्रयोगेण छात्राणां मानसिकप्रक्रिया त्वरान्विता भवति । सम्प्रति पाठनं शिक्षणं नीरसञ्च वर्तते। अतः शिक्षणे निरसतां निष्कास्य छात्राणां मनसि उत्साहवर्धनाय विविध प्रकाराः प्रयोगाः करणीयाः । अनेन दुर्बोधविषयोऽपि अति सारल्येन अवबुध्यते इति । विविधतन्त्रयुक्तीनां प्रयोगेण छात्राणां सर्जनात्मिका विचारात्मिका, विमर्शनात्मिका च शक्तिः अभिवर्धते।

छात्राणां बुद्धेः विकासे तन्त्रयुक्तीनां महती भूमिका वर्तते । विनूतनानि तन्त्रज्ञानानि प्रतिदिनं व्यवहारपथम् आयान्ति अद्यत्वे। यदि तेषाम् अन्वयाय संस्कृतक्षेत्रं सज्जं न स्यात् तर्हि निश्चयेन संस्कृतस्य हानिः स्यात्।

सन्दर्भग्रन्थाः (Reference books) -

1. शिक्षामनोविज्ञनम्, पि. नागमुनि रेड्डी, राष्ट्रियसंस्कृतविद्यापीठम्, तिरुपतिः।
2. आधुनिकं शिज्ञामनोविज्ञानम्, डा. लोकमान्य मिश्र1, मृगाक्षी प्रकाशनमम्, लखनउ।
3. प्रयोगात्मकं शिक्षामनोविज्ञानम् (Experimental Educational Psychology), डा. मदन मोहन झा, प्रकाशिका - श्रीमती पूनम झा, पुरी, ओडिसा।
4. शिक्षायाः मनोवैज्ञानिकाधाराः, डा. बी. पद्ममित्र श्रीनिवासः, जगदीश संस्कृत पुस्तकालय।
5. सुश्रुतसंहिता, चोखम्बा सुरभरती, वाराणासी।
6. चरकसंहिता, चोखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणासी।
7. कौटिल्य आर्थशास्त्रम्, डा. एन् पि उन्निः, राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्, नवदेहली।